श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय सांगानेर, जयपुर

(संबद्धता केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर एवं
जगद्गुरू रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर)

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

15 दिवसीय ज्योतिष शास्त्र प्रशिक्षण शिविर

प्रशिक्षिका- आचार्या कीर्ती शर्मा

प्राचार्य
श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय सांगानेर

अध्यक्षा
(ज्योतिष वेद वेदांग संस्कृत संस्थान जयपुर)

प्राचार्य
श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय

सूचना

विषय - शास्त्री वर्ग के छात्रों के 15 दिवसीय प्रशिक्षण शिविर के संबंध में.....

विद्यालय एवं महाविद्यालय में अध्यापन कराने वाले सभी अध्यापकों को सूचित किया जाता है की दिनांक 05/08/2023 से 20/08/23 तक केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के निर्देशानुसार 15 दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन महाविद्यालय में शास्त्री वर्ग के छात्रों के लिए सुनिश्चित हुआ है जिसमें आदरणीय कीर्ति शर्मा जी का मार्गदर्शन प्राप्त हो रहा है।

कार्यक्रम में प्रशिक्षुक शास्त्री द्वितीय वर्ग के समस्त छात्र/छात्राएं ज्योतिष शास्त्र का अध्ययन करेंगे।

कार्यक्रम के शुभारंभ में सभी अध्यापक अपनी उपस्तिथि देकर उसको सफल बनाने में सहयोग देवे

धन्यवाद

संयोजक

प्राचार्य

ज्योतिषशास्त्र

अनुक्रमणिका

1.ज्योतिष शास्त्र का परिचय

2.पञ्चाङ्ग-प्रकरण

3.नक्षत्र नाम व स्वामी

4.वार निर्माण

5.योग

6.करण, करण-परिभाषा व प्रकार

7.लग्न निर्धारण

8.संक्रान्ति प्रकरण

9.अधिक मास

10.क्षय मास

11.तिथि

12.क्षय-वृद्धि

13.राशि व स्वामी

14.राशि का स्वभाव फिर से राशि की उत्पत्ति

15.जन्म राशि नाम

16.राशि का नामकरण

17.गृह परिचय

18.शुभग्रह,पापग्रह,ग्रहों की मैत्री

19.ग्रहो की दृष्टि

20.लग्न साधन (लग्नेश अनुसार)

21.जातक का व्यक्तित्व व

22.मूहूर्त विचार

प्राचार्य
श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय
जैन नसियाँ रोड, सांगानेर, जयपुर-29 (राज.)

ज्योतिष प्रशिक्षण हेतु प्रशिक्षुक छात्र क्रमणिका

शास्त्री प्रथम वर्ष छात्र वर्ग

1.आदि जैन
2.आगम जैन
3.अभिषेक जैन
4.अभिषेक जैन
5.अवनीश जैन
6.अनुज जैन
7.अंशु जैन
8.आलोक जैन
9.बंटी जैन
10.पारस जैन
11.आयुष जैन
12.आयुष जैन
13.अक्षत जैन
14.अमन जैन
15.अभिषेक जैन
16.अर्पित जैन
17.अनुभव जैन
18.अनुपम जैन
19.निखिल जैन
20.राही जैन
21.संकेत जैन
22.पारस जैन
23.मोहित जैन
24.कपिल जैन
25.जैन सक्षम
26.चिकटे सोमेशजैन
27.पियूष जैन
28.पीयूषजैन
29.सम्यक जैन
30.सम्यक जैन
31.संयम जैन
32.संयम जैन
33.सौरभ जैन
34.सुधांशु जैन
35.सुभांसु जैन
36.संदीप जैन
37.तन्मय जैन
38.विकास जैन
39.अनुभव जैन
40.देवांश जैन
41.पंकज जैन
42.प्रदीप जैन
43.राज जैन

प्राचार्य
श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय
जैन नसियाँ रोड, सांगानेर, जयपुर-29 (राज.)

ज्योतिष प्रशिक्षण हेतु प्रशिक्षुक छात्र क्रमणिका

शास्त्री प्रथम वर्ष छात्रा वर्ग

1. आन्या जैन
2. अक्षरा जैन
3. अंशिका जैन
4. अपूर्वा जैन
5. आराध्या जैन
6. उर्वशी जैन
7. दिव्यांशी जैन
8. जीवांशी जैन
9. काजल जैन
10. पायल जैन
11. पूर्ती जैन
12. प्रिंसी जैन
13. रिया जैन
14. रिया जैन
15. रिया जैन
16. रिया जैन
17. साक्षी जैन
18. सिमी जैन
19. शैली जैन
20. दीपाली जैन
21. प्रियांशी जैन

प्राचार्य
श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय
जैन सोसायटी रोड, सांगानेर, जयपुर-29 (राज.)

GPS Map Ca
Jaipur, Rajasthan, India
Diggi Rd, Bambala, Jaipur, Rajasthan 302029,
Lat 26.801963°
Long 75.792923°
08/08/23 03:02 PM GMT +05:30
Google

प्राचार्य
श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय
जैन नसियाँ रोड, सांगानेर, जयपुर-29 (राज.)

रजि. नं. 34/जयपुर/1995-96

ज्योतिष-वेदवेदाङ्ग-संस्कृतसंस्थानम्

(समस्त भारत में अधिकृत संस्था)

प्रधान कार्यालय : 82/72, "शिवांगन" नर्मदा अपार्टमेन्ट के सामने, चेतक मार्ग, प्रताप नगर हाउसिंग बोर्ड, जयपुर (राज.) 302033
दूरभाष : 0141-2793246, 9950570978, 9530236129, 9414034747

क्रमांक 02 दिनांक 18.08.23

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि छात्र/छात्रा भान्या जैन कक्षा शास्त्री-द्वितीय वर्ष पुत्र/पुत्री श्री विकास जैन ने श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय, सांगानेर, जयपुर में आयोजित 01 अगस्त से 16 अगस्त के मध्य पन्द्रह दिवसीय ज्योतिष शास्त्र प्रशिक्षण शिविर में उपस्थित रह कर सक्रिय भाग लिया।

संयोजक
आचार्या कीर्ति शर्मा

ज्योतिष-वेद वेदांग-संस्कृत संस्थानम्
82/72, चेतक मार्ग, प्रताप नगर
हा. बोर्ड, जयपुर

रजि. नं. 34/जयपुर/1995-96

ज्योतिष-वेदवेदाङ्ग-संस्कृतसंस्थानम्

(समस्त भारत में अधिकृत संस्था)

प्रधान कार्यालय : 82/72, "शिवांगन" नर्मदा अपार्टमेन्ट के सामने, पैतक मार्ग, प्रताप नगर हाउसिंग बोर्ड, जयपुर (राज.) 302033
दूरभाष : 0141-2793246, 9950570979, 9530238129, 9414034747

क्रमांक ०९६

दिनांक १९.०८.२२

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि छात्र/छात्रा दिपाली जैन कक्षा शास्त्री द्वितीय सत्रार्द्ध पुत्र/पुत्री श्री खेमचन्द जैन ने श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय, सांगानेर, जयपुर में आयोजित 01 अगस्त से 16 अगस्त के मध्य पन्द्रह दिवसीय ज्योतिष शास्त्र प्रशिक्षण शिविर में उपस्थित रह कर सक्रिय भाग लिया।

संयोजक

आचार्या कीर्ती शर्मा

ज्योतिष-वेद वेदांग-संस्कृत संस्थानम्
82/72, पैतक मार्ग, प्रताप नगर
हा. बोर्ड, जयपुर

रजि. नं. 34/जयपुर/1995-96

ज्योतिष-वेदवेदाङ्ग-संस्कृतसंस्थानम्

(समस्त भारत में अधिकृत संस्था)

प्रधान कार्यालय : 82/72, ''शिवांगन'' नर्मदा अपार्टमेन्ट के सामने, चेतक मार्ग, प्रताप नगर हाउसिंग बोर्ड, जयपुर (राज.) 302033
दूरभाष : 0141-2793240, 9950570978, 9530238120, 9414034747

क्रमांक 29

दिनांक 12.08.23

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि छात्र/छात्रा देवांश जैन कक्षा शास्त्री द्वितीय वर्ष पुत्र/पुत्री श्री दीपचन्द्र ने श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय, सांगानेर, जयपुर में आयोजित 01 अगस्त से 16 अगस्त के मध्य पन्द्रह दिवसीय ज्योतिष शास्त्र प्रशिक्षण शिविर में उपस्थित रह कर सक्रिय भाग लिया।

संयोजक

आचार्य कीर्ती शर्मा

ज्योतिष-वेद वेदांग-संस्कृत संस्थानम्
82/72, चेतक मार्ग, प्रताप नगर
ह. बोर्ड, जयपुर

रजि. नं. 38/जयपुर/1995-96

ज्योतिष–वेदवेदाङ्ग–संस्कृतसंस्थानम्

(समस्त भारत में अधिकृत संस्था)

प्रधान कार्यालय : 92/72, ''शिवांगन'' नर्मदा अपार्टमेन्ट के सामने, पैतक मार्ग, प्रताप नगर हाउसिंग बोर्ड, जयपुर (राज.) 302033
दूरभाष : 0141-2793246, 9950570978, 9530238129, 9414834747

क्रमांक 30 ...... दिनांक 19.08.23

प्रमाण–पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि छात्र/छात्रा दिव्यांशी जैन पौत्र/पौत्री श्री दिलीप शास्त्री पुत्र/पुत्री श्री जीवेन्द्र कुमार जैन ने श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय, सांगानेर, जयपुर में आयोजित 01 अगस्त से 16 अगस्त के मध्य पन्द्रह दिवसीय ज्योतिष शास्त्र प्रशिक्षण शिविर में उपस्थित रह कर सक्रिय भाग लिया।

संयोजक

आचार्य कीर्ति शर्मा

ज्योतिष-वेद वेदांग-संस्कृत संस्थानम्
92/72, पैतक मार्ग, प्रताप नगर
हा. बोर्ड, जयपुर

Annexure

Internship Report

A report submitted in partial fulfillment for the Award of Degree of
Shastri second semester

By

Name of the Student Aanya Jain
Enrollment No:...5/22 - 23/59

Under the Supervision of
Dr. Keerti Sharma
ज्योतिष वेद वेदाङ्ग संस्कृत संस्थानं जयपुर
Name of the Campus/ Institute/Organisation
(Duration - from 1 Aug 2023 to 16 Aug 2023

CENTRAL SANSKRIT UNIVERSITY

56-57, Institutional Area, Janakpuri, New Delhi-110058

Certificate Of

DECLARATION

I, Aanya Jain, hereby declare that this project report entitled "ज्योतिषशास्त्रस्य प्रशिक्षुता कार्यक्रम" has been prepared by me towards the partial fulfillment of the requirement for the award of "SHASTRI" degree under the guidance of 'Aacharya Keerti Sharma'.

I also declare that this project report is my original work and has not been previously submitted.

Name- Aanya Jain
Place - Sanganer, Jaipur

Signature of Student

Camlin Page

DAY-1

ज्योतिष शास्त्र का परिचय

- ज्योतिष शास्त्र कहाँ से प्राप्त हुआ ?
"ज्योतिषशास्त्रं वेदाङ्गत्वम्"
यह अथर्ववेद से प्राप्त हुआ है।
"ज्योतिषामयनं चक्षुः" - यह षट् वेद के अंगों में ज्योतिष को चक्षु की उपमा देकर अतिमहत्वपूर्ण अंग बताया गया है। जैसे वर्तमान काल की घटनाओं को नेत्र से देखते हैं, वैसे ही भविष्य का दर्शन इसी से संभव है।
- ज्योतिष-शास्त्र क्यों पढ़ें ?
कर्म दो प्रकार के होते हैं - 1. दृढ़ कर्म 2. अदृढ़ कर्म। दृढ़ कर्म के फल का नाश किसी भी उपाय से नहीं होता है। उस फल का भोग करना ही पड़ता है। परंतु अदृढ़ कर्म के फल का यत्नपूर्वक यज्ञ-अनुष्ठानादि करने पर क्षय हो सकता है। ज्योतिष शास्त्र के द्वारा शुभाशुभ कर्म का ज्ञान किया जा सकता और अशुभ कर्मों के फल को कम भी किया जा सकता है। सामाजिक जीवन में ग्रहण, योगादि का ज्ञान इसके बिना संभव नहीं है। विभिन्न संस्कारों के मुहूर्त, विभिन्न प्रकार के निर्माण आदि के मुहूर्त शोधन के लिए भी यह अत्यन्त आवश्यक है। अतः ज्योतिष शास्त्र का सामान्य ज्ञान प्रत्येक व्यक्ति को होना चाहिए।

- ज्योतिष-शास्त्र किसे कहते हैं ?
"कालज्ञापकं शास्त्रं ज्योतिषं"
ज्योतिषशास्त्रं प्रत्यक्षशास्त्रमपि उच्यते।
ज्योतिषशास्त्र में मूलतः ग्रह, नक्षत्र, तारा, उल्का आदि के विषय में साङ्गोपाङ्ग अध्ययन किया जाता है। इस ब्रह्माण्ड में जो भी चराचर जीव हैं उनमें पञ्चमहाभूत, तीनों गुण (सत्व, रज, तम) सात प्रकार की धातुएँ आदि ग्रहनक्षत्रादि के प्रभाव से रहते हैं।

• ज्योतिष-शास्त्र के तीन स्कन्ध
ज्योतिष शास्त्र को तीन स्कन्धों (सिद्धान्त, संहिता, होरा) में विभाजित किया गया है। वे तीनों भाग ही त्रिस्कन्धज्योतिष कहे जाते हैं।

1. सिद्धान्त - ग्रह नक्षत्र सम्बन्धी छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी समस्त प्रकार के गणना का विधान जिस स्कन्ध में हो वह सिद्धांत कहलाता है।
2. संहिता - ग्रह नक्षत्रादि के गति स्थिति आदि के आधार पर सामूहिक शुभाशुभ घटनाओं का अध्ययन जिस स्कन्ध में हो वह संहिता है।
3. होरा - ग्रहनक्षत्रादि के प्रभाव से व्यक्तिगत जीवन की शुभाशुभ घटना का अध्ययन जिस स्कन्ध में हो वह होरा है।

• ज्योतिष-शास्त्र प्रवर्तक
मूलतः इस शास्त्र का प्रवर्तक तो वेद है। कालक्रम में इस शास्त्र के प्रवर्तक का श्रेय जिन्हें मिला है और इतिहास में उल्लेख भी है उनमें सर्वप्रमुख हैं - 1. सूर्य, 2. पितामह, 3. व्यास, 4. वशिष्ठ, 5. अत्रि, 6. पराशर, 7. कश्यप, 8. नारद, 9. गर्ग, 10. मरीचि, 11. मनु, 12. अङ्गिरा, 13. लोमश, 14. पौलिश, 15. च्यवन, 16. यवन, 17. भृगु एवं 18. शौनक।

• ज्योतिष-शास्त्र में काल-परिभाषा
" गुर्वक्षराणामुदितं च षष्ठ्या
पलं पलानां घटिका किलैका।
षष्ठ्या घटीनां भदिनं
तयाऽऽर्द्धोतिर्यैकया चन्द्रमसो दिनं स्यात् ॥"

60 गुरु अक्षर = १ पल = २४ सैकेण्ड
60 पल = १ घटी = २४ मिनिट
60 घटी = १ दिन = २४ घण्टा
(१ नाक्षत्र अहोरात्र)

Camlin Page

DAY - 2

पञ्चाङ्ग - प्रकरणम्

- पञ्चाङ्गस्य परिभाषा -

"तिथिवारं च नक्षत्रं योगः करणमेव च।
पञ्चाङ्गस्यैतान्यङ्गानि कथितानि महर्षिभिः॥"

काल का ज्ञान ज्योतिष शास्त्र द्वारा होता है। ज्योतिष शास्त्र का काल विवेचनात्मक रूप ही पञ्चाङ्ग है। जगत के समस्त शुभाशुभ कर्म का आधार पञ्चाङ्ग होता है।

पञ्चाङ्गस्य पञ्चाङ्गाः सन्ति - 1. तिथिः
2. वारं
3. नक्षत्रं
4. योगः
5. करणम्

① तिथिः

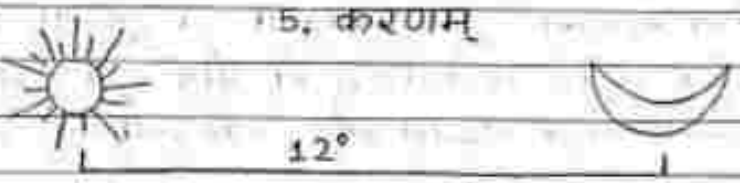

सूर्य और चन्द्रमा की दूरी अपनी - अपनी कक्षाओं में जब 12 अंशों की हो जाती है, तो एक तिथि का मान पूरा हो जाता है।
जैसे - अमावस्या तिथि को सूर्य एवं चन्द्र तुल्य राशि, अंश एवं कला पर रहते हैं। शीघ्रगतिकचन्द्रः क्रमशः आगे को चलता हुआ सूर्य को पीछे छोड़ता हुआ सूर्य से अपनी दूरी बढ़ाता जाता है।
उदाहरण के लिए अमावस्या के दिन यदि सूर्य और चन्द्रमा मेष राशि में शून्य अंश पर हों और अगले दिन चन्द्रमा अपनी कक्षा में 13 वें अंश पर चला जाए तथा सूर्य अपनी कक्षा में पहले अंश पर हो, तो इन दोनों की दूरी 12 अंशों की होगी।
1 तिथि = 12 अंश ∴ 30 तिथियाँ = 12 × 30 = 360°।

तिथयः -
प्रतिपत १, द्वितीया २, तृतीया ३, चतुर्थी ४, पञ्चमी ५, षष्ठी ६, सप्तमी ७, अष्टमी ८, नवमी ९, दशमी १०, एकादशी ११, द्वादशी १२, त्रयोदशी १३, चतुर्दशी १४, कृष्णपक्षे अमावस्या ३० तथा च शुक्लपक्षे पूर्णिमा १५।

तिथेः संज्ञा
"नन्दा च भद्रा च जया च रिक्ता
पूर्णेतितिथ्योऽशुभमध्यशस्ताः।
सितेऽसिते शस्तसमाधमाः स्युः
सितज्ञ भौमार्किगुरौ च सिद्धाः॥"
प्रतिपदादि तिथियों की क्रमशः नन्दा, भद्रा, जया, रिक्ता और पूर्णा ये पाँच संज्ञाएँ होती हैं।
→ इस प्रकार दोनों पक्षों के 5-5 तिथियों के ६ भाग होते हैं। इनमें शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से ५ तिथि अशुभ, षष्ठी से दशमी पर्यन्त मध्यम और एकादशी से पूर्णिमा पर्यन्त शुभ होती हैं तथा कृष्ण पक्ष में प्रतिपदा से पाँच शुभ होती हैं, षष्ठी से दशमी पर्यन्त मध्यम और एकादशी से अमावस्या तक अशुभ मानी गयी हैं।
चक्रे सर्व स्पष्टम् -

तिथि			संज्ञा	सिद्धियोग	अमृतयोग	मृत्युयोग
१	६	११	नन्दा	शुक्रवार	बुध, शनि	रवि, मंगल
२	७	१२	भद्रा	बुधवार	मंगलवार	सोम, शुक्र
३	८	१३	जया	मंगलवार	गुरुवार	बुधवार
४	९	१४	रिक्ता	शनिवार	शुक्रवार	गुरुवार
५	१०	१५/३०	पूर्णा	गुरुवार	रवि, सोम	शनिवार

DAY - 3

वारा:

वारा: -

रवि, सोम, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनय: इति सप्तवारा:।

वारनिर्माण:

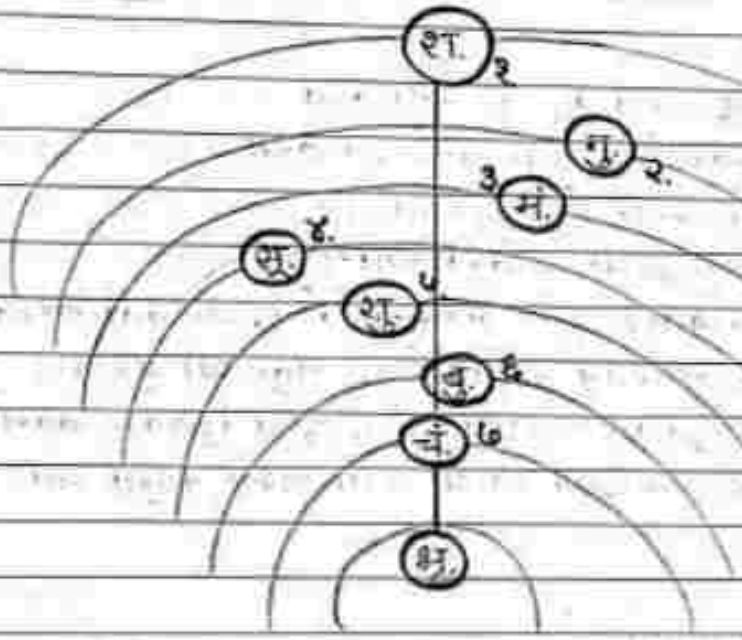

वार का नाम उस ग्रह के नाम पर रखा गया है, जो वार के आरम्भ में पहले घण्टे (होरा) का स्वामी होता है। किस घण्टे का स्वामी कौन ग्रह होगा? इसके लिए क्रम जानना जरूरी है। पृथ्वी से सबसे अधिक दूरी पर शनि ग्रह है, फिर क्रमश: नजदीक बृहस्पति, मंगल, सूर्य, शुक्र, बुध, चन्द्र है। सृष्टि के प्रारम्भ-काल में सूर्य ही दिखा था, इसलिए प्रथम होरा का स्वामी रवि को कहा जाता है। एक घण्टा परिमित, एक होरा होता है। फिर दिन के २रें होरा का स्वामी शुक्र, तीसरे का बुध, चौथे का चंद्रमा, पाँचवे का शनि, छठें का बृहस्पति, सातवें का मंगल, आठवें का रवि ऐसे ही क्रमश: २४वें का स्वामी बुध होता है और दूसरे दिन के प्रथम होरा का स्वामी चन्द्रमा होता है, अत: दूसरे दिन को सोमवार कहते हैं। इस प्रकार वार निर्माण होते हैं।

Camlin Page

वारेश-व्यवस्था

"मन्दादधः क्रमेण स्युश्चतुर्था दिवसाधिपाः"

अर्थात् शनैश्चरात् अधोऽधः कक्षाक्रमेण चतुर्थ-चतुर्थग्रहाः वारेशाः भवन्ति। यथा- यदि प्रथमः वारेशः शनिस्तदा तस्मादधश्चतुर्थः रविस्ततोऽपि चतुर्थश्चन्द्रस्ततश्चतुर्थो भौमस्ततो बुधस्ततः गुरुस्ततश्च शुक्रः इति वारेश-व्यवस्था ग्रहाणामारोहक्रमेण सिद्ध्यति।

वर्ज्ययोगाः

"वर्जयेत् सर्वकार्येषु हस्तार्कं पञ्चमीतिथौ
भौमाश्विनीं च सप्तम्यां षष्ठ्यां चन्द्रैन्दवं तथा॥
बुधानुराधामष्टम्यां दशम्यां भृगुरेवतीम्।
नवम्यां गुरु पुष्यं चैकादश्यां शनिरोहिणीम्॥"

अर्थात् हस्त नक्षत्र रविवार और पञ्चमी तिथि, अश्विनी मंगलवार, सप्तमी तिथि, सोमवार मृगशीर्ष षष्ठी तिथि, अनुराधा बुधवार अष्टमी तिथि, रेवती शुक्रवार दशमी तिथि, पुष्य गुरुवार नवमी तिथि और रोहिणी शनिवार एकादशी तिथि हो तो सभी कार्यों को त्याग देना चाहिए।

वार-कृत्यम्

"सोम सौम्यगुरु शुक्रवासराः
सर्वकर्मसु भवन्ति सिद्धिदाः।
भानुभौम शनिवासरेषु च
प्रोक्तमेव खलुकर्म सिद्ध्यति॥"

वार-वेला निर्णयः

" रवौवर्ज्यं चतुः पञ्च सोमे सप्तद्वयं तथा।
कुजेषष्ठं द्वयं चैव बुधे पञ्च तृतीयकम्॥
गुरौषष्ठाष्टकञ्चैव शुक्रेवेदतृतीयकम्।
शनावाद्यन्तषष्ठश्च वारवेलातिनिन्दिताः॥"

दिन में ४ और रात में ४ प्रहर होते हैं। एक प्रहर का आधा भाग अर्धयाम कहलाता है अतः दिन में ८ और रात में भी ८ अर्धयाम होते हैं। उपर्युक्त अर्धयामों में शुभकर्मों का त्याग करना चाहिए।

Camlin Page

DAY-4

नक्षत्रम्

"न क्षरति इति नक्षत्रम्" - "ताराणां समूहः नक्षत्रम्"
राशिमण्डल के तुल्य 27 विभाग किए गए हैं। जो 27 नक्षत्रों के नाम से जाने जाते हैं। 21600 कला का 27 वाँ भाग (21600 ÷ 27) = 800 कला है। इसलिए प्रत्येक नक्षत्र की भोगकला 800 कला मानी जाती है या आकाश में क्रान्तिवृत्तीय तारा-मण्डल को बराबर 27 भागों में विभाजित करने पर एक-एक खण्ड, एक-एक नक्षत्र कहे जाते हैं।
इस तरह प्रति नक्षत्र के हिस्से में जितने तारे आते हैं और उन तारों से जो विभिन्न खण्डों की विभिन्न आकृतियाँ बनती हैं, वे ही 27 नक्षत्र हैं।

नक्षत्राणि -
अश्विनी १, भरणी २, कृत्तिका ३, रोहिणी ४, मृगशीर्ष ५, आर्द्रा ६, पुनर्वसु ७, पुष्य ८, आश्लेषा ९, मघा १०, पूर्वाफाल्गुनी ११, उत्तरफाल्गुनी १२, हस्त १३, चित्रा १४, स्वाती १५, विशाखा १६, अनुराधा १७, ज्येष्ठा १८, मूल १९, पूर्वाषाढा २०, उत्तराषाढा २१, अभिजित् २२, श्रवण २३, धनिष्ठा २४, शतभिषा २५, पूर्वाभाद्रपदा २६, उत्तराभाद्रपदा २७, रेवती २८

• संख्यकमभिजिन्नक्षत्रं विहाय २७ सप्त विंशति नक्षत्राण्येव गृह्यन्ते।

नक्षत्रेशाः
"नासत्यान्तकवह्निधातृशशभृ
रुद्रेशाः पितरो भगोऽर्यमरवी
त्वष्टानिलः खलु मित्र इन्द्रनिर्ऋतिक्षीराणि विश्वेविधि-
र्गोविन्दो वसुतोयपाजचरणाहिर्बुध्न्यपूषाभिधाः ॥"

→ अर्थात् अश्विनी कुमार, यम, अग्नि, ब्रह्मा, चन्द्रमा, शिव, अदिति, बृहस्पति, सूर्य, पितर भगनामक सूर्य, अर्यमा, सूर्य, प्रजापति, वायु, इन्द्राग्नि, मित्र, इन्द्र, राक्षस, जल, विश्वदेव, ब्रह्मा, विष्णु,

वसुगण, वरुण, अजचरण (देव विशेष) अहिर्बुध्न्य नामक सूर्य, और पूषा नामक सूर्य ये देवता अश्विनी आदि नक्षत्रों के स्वामी हैं।

नक्षत्रचरणज्ञानम्

चू, चे, चो, ला	अश्विनी	१	ली लू ले लो	भरणी	२
अ, इ, उ, ए	कृत्तिका	३	ओ वा वी वू	रोहिणी	४
वे, वो, क, की	मृगशीर्ष	५	कु घ ङ छ	आर्द्रा	६
के, को, ह, ही	पुनर्वसु	७	हू हे हो डा	पुष्य	८
डी, डू, डे, डो	आश्लेषा	९	मा मी मू मे	मघा	१०
मो, टा, टी, टू	पूर्वाफाल्गुनी	११	टे टो प पी	उत्तरफाल्गुनी	१२
पू, ष, ण, ठ	हस्त	१३	पे पो रा री	चित्रा	१४
रु रे रो ता	स्वाती	१५	ती तू ते तो	विशाखा	१६
ना नी नू ने	अनुराधा	१७	नो या यी यू	ज्येष्ठा	१८
ये यो भ भी	मूल	१९	भू ध फ ढ	पूर्वाषाढा	२०
भे भो ज जी	उत्तराषाढा	२१	जू जे जो खा	अभिजित्	२२
खी खू खे खो	श्रवण	२३	ग गी गू गे	धनिष्ठा	२४
गो स सी सू	शतभिषा	२५	से सो द दी	पूर्वाभाद्रपदा	२६
दू थ झ ञ	उत्तराभाद्रपदा	२७	दे दो च ची	रेवती	२८

अभिजितनक्षत्रम्

एतदतिरिक्तमभिजिदपि अष्टविंशतितमं नक्षत्रमस्ति। ज्योतिर्विदामभिप्रायेण उत्तराषाढायाः अन्तिमपञ्चदशघटिकास्तथा श्रवणायाः प्रारम्भिकचतुर्घटिकाः मिलित्वा १९ घटिकाः अभिजिन्नक्षत्रस्य वर्तन्ते। सर्वेषु कार्येष्वेताः घटिकाः शुभप्रदास्सन्ति।

एकस्य नक्षत्रस्य मानं = 360/27 = 13°20'।

Day - 5

योगाः

ज्योतिषशास्त्रे योगविचारः महत्त्वपूर्णं स्थानमावहति। सम्पूर्णं फलितं ज्योतिषमस्योपर्येव निर्भरं भवति। कुण्डल्यां ग्रह-नक्षत्र-राशीनां स्थित्यनुरोधेन योगो भवति। तेषां योगानुरोधेन च जातकस्य भाग्यनिर्धारणं क्रियते तथा जीवनचर्यायाः फलाफलं विचार्यते। अत्रके सूर्यचन्द्रमसोः स्थित्यनुरोधेन सप्तविंशतियोगाः कल्पिताः सन्ति, यैः कार्यसम्पादनार्थं उचितानुचितकालनिर्धारणं क्रियते।

"यस्मिन्नृक्षे स्थितो भानुर्यत्र तिष्ठति चन्द्रमाः।
एकीकृत्य त्यजेदेकं योगा विष्कम्भकादयः॥"

अर्थात चन्द्राक्रान्ते दिननक्षत्रे सूर्याक्रान्तनक्षत्रेण युते सप्तविंशतितमे तदिननक्षत्रान्ते स्थूलमानेन योगो भवति। सूक्ष्मविचारस्तु रविस्पष्टचन्द्रस्पष्टयोगे कलीकृते अष्टशतकलाभक्ते विष्कम्भादिरेको योगो भवति। एवं समग्ररूपेण सप्तविंशतियोगाः सन्ति।

नामानि -

विष्कम्भः 1, प्रीतिः 2, आयुष्मान् 3, सौभाग्यम् 4, शोभनः 5, अतिगण्डः 6, सुकर्मा 7, धृतिः 8, शूलम् 9, गण्डः 10, वृद्धिः 11, ध्रुवम् 12, व्याघातः 13, हर्षणः 14, वज्रः 15, सिद्धिः 16, व्यतिपातः 17, वरीयान् 18, परिघः 19, शिवः 20 सिद्धः 21, साध्यः 22, शुभ 23, शुक्लः 24, ब्रह्म 25, ऐन्द्रः 26, वैधृतिः 27, इति।

योगानां त्याज्याः घटयः

"परिघार्धं पञ्चशूले षट् च गण्डातिगण्डयोः।
व्याघाते नव नाडयश्च वर्ज्याः सर्वेषु कर्मसु॥"

परिघयोगस्य पूर्वार्द्धः भागः शूलादियोगस्य प्रारम्भिकाः पञ्च घटयः व्याघातयोगस्य च आदि नवघटयः शुभकर्मसु त्याज्याः भवन्ति।

करणज्ञानम्

"तिथ्यर्धं करणं कथ्यते"

तिथि के आधे भाग को करण कहा जाता है। इसलिए 1 तिथि में दो करण होते हैं। करण दो प्रकार के होते हैं।

चल करण - चल करण 7 हैं 1) बवः 2) बालवः
3) कौलवः 4) तैतिलः 5) गरः 6) वणिजः
7) विष्टिः (विष्टि करण को ही भद्रा कहते हैं)

स्थिर करण - ये 4 हैं।
1) शकुनि। 2) चतुष्पद। 3) नागः। 4) किंस्तुघ्नम्
"एकादशकरणानि भवन्ति"।

स्थिरकरणानि : कृष्णपक्षे चतुर्दश्युत्तरार्धतो शुक्लपक्षे प्रतिपत्पूर्वार्द्धं यावद् भवन्ति।

शुक्लपक्ष	तिथि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
	पूर्वार्ध	कि.स्थि	बा	तै	व	ब	कौ	ग	भ	बा	नै	व	ब	कौ	ग	भ
	परार्ध	ब.	कौ.	ग	भ	बा	तै	व	ब	कौ	ग	भ	बा	तै	व	ब
कृष्णपक्ष	तिथि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
	पूर्वार्ध	बा.	तै	व	ब	कौ	ग	भ	वा	तै	व	ब	कौ	ग	भ	नागि
	परार्ध	कौ	ग	भ	बा	तै	व	ब	कौ	ग	भ	बा	तै	व	शकि	च.स्थि

Day-6

लग्न निर्धारण

लग्न शब्द से ही प्रतीत होता है कि एक वस्तु दूसरे वस्तु में लगता है। वस्तुतः लग्न में यही होता है। क्योंकि इष्टकाल में क्रान्तिवृत्त का जो स्थान उदयक्षितिज में लगता है वही राश्यादि लग्न होता है। जैसे 12 राशियाँ होती है उसी प्रकार 12 लग्न भी होते हैं और उनके नाम भी वे ही है जो 12 राशियों के हैं।
सिर्फ इतना अन्तर होता है कि राशियों का स्थान क्रान्तिवृत में प्रकल्पित है और लग्नों का अहोरात्र वृत्तमें।

12 लग्न -
1. मेष
2. वृष
3. मिथुन
4. कर्क
5. सिंह
6. कन्या
7. तुला
8. वृश्चिक
9. धनु
10. मकर
11. कुम्भ
12. मीन

- पञ्चांग में समय व तिथि देखकर लग्न का निर्धारण किया जाता है। कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं -

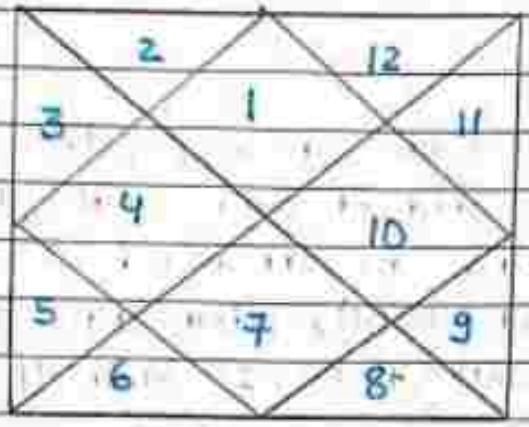

Camlin Page

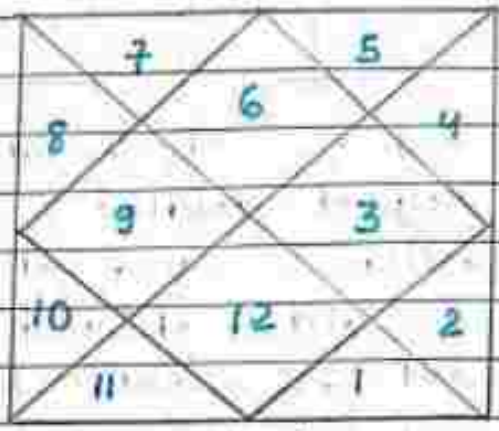

① 16 अगस्त रात- 10:10

② 15 अगस्त सुबह- 9:57

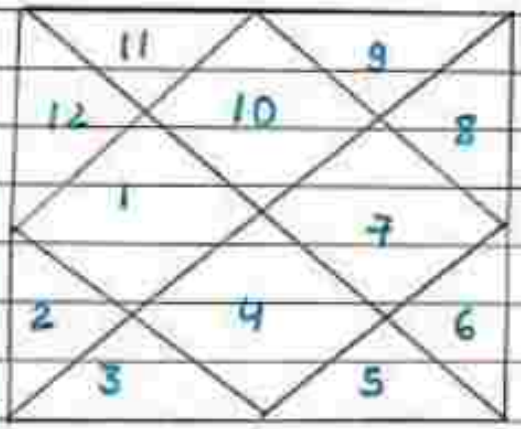

③ 14 अगस्त शाम- 6:30

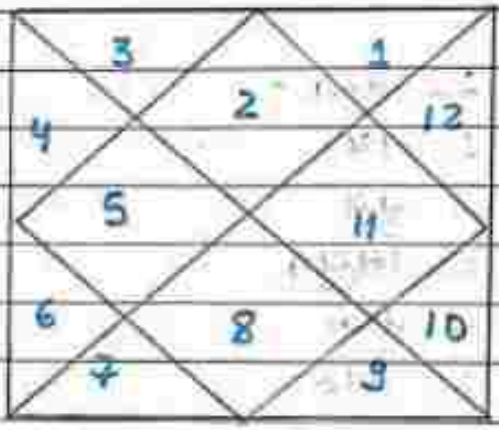

④ 10 अगस्त रात- 12:01

⑤ 8 अगस्त रात 2:00

Camlin Page

Day-7

संक्रान्ति प्रकरण

मेष आदि बारह राशियाँ राशिचक्र में पूर्व-पूर्वक्रम से स्थित हैं। इनका आरम्भ स्थान मेष राशि है। सूर्य के एक राशि से दूसरी राशि में संक्रमण करने (प्रवेश करने) को संक्रान्ति कहते हैं। यह काल स्नान दानादि के लिए महत्त्वपूर्ण माना गया है। अर्थात सूर्य जिस दिन एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करता है उस दिन को संक्रान्ति का दिन कहते हैं। जैसे सूर्य जिस दिन मेष राशि में प्रवेश करता है उसे मेष की संक्रान्ति कहते हैं।

इसी तरह सूर्य का वृष राशि में प्रवेश करना वृष की संक्रान्ति तथा मीन राशि में प्रवेश करना मीन की संक्रान्ति कही जाती है। इस प्रकार वर्ष में बारह संक्रान्तियाँ होती हैं।

मास - काल की एक इकाई का नाम मास है जो सामान्यतया 30 दिनों का होता है। प्रायोगिक रूप से मास 4 प्रकार का होता है-
(1) सौर (2) चान्द्र (3) नाक्षत्र और (4) सावन।

(1) सौर मास
सूर्य का एकराशि भोग काल अर्थात एक संक्रान्ति से दूसरी संक्रान्ति तक का काल सौर मास कहलाता है। उसमें 30 सौर दिन होते हैं।

(2) चान्द्र मास
शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से कृष्णपक्ष की अमावस्या तक तीस तिथियों का एक चान्द्रमास होता है। इसलिए पञ्चांग में

शुक्लपक्ष की प्रतिपदा की संख्या 1 और अमावस्या की तीस संख्या लिखी जाती है। एक चान्द्रमास 29 दिन, 12 घण्टे, 44 मिनिट, 2½ सेकेण्ड का होता।

चान्द्र मास व्यवस्था - दो व्यवस्थाएँ देखी जाती हैं - शुक्लादि और कृष्णादि। शुक्लादि चान्द्रमास को अमान्तमास भी कहते हैं। कृष्णादि चान्द्रमास को पूर्णिमान्त चान्द्रमास कहते हैं। उत्तर में कृष्णादि और दक्षिण में दक्ष शुक्लादि मास प्रसिद्ध हैं।

चान्द्रमास - चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ, फाल्गुन।

अधिकमास
शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से कृष्णपक्ष की अमावस्या के अन्त तक यदि संक्रान्ति नहीं हो तो असंक्रान्तिमास या अधिमास (मलमास) होता है।
एक संक्रान्ति हो तो शुद्धमास होता है।

क्षयमास
दो संक्रान्तियाँ हों तो क्षयमास होता है।
अधिमास लगभग 32 मासों में एक होता है। जबकि क्षयमास कदाचित् 141 वर्ष या 19 वर्षों पर हुआ करता है।
जिस वर्ष में क्षयमास होता है उस वर्ष क्षयमास से पहले एक और बाद में एक इति क्रम से दो अधिमास होते हैं।

नक्षत्र मास - प्रवह वायु के प्रभाव से पूर्व क्षितिज से नक्षत्र चलकर जितने समय में पुनः पूर्व क्षितिज में आता है = 30 दिन।
नक्षत्र दिन 60 घटी का होता है।
सावन मास - एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय के अन्तर्वर्ती काल को सावनदिन कहते हैं। 30 दिनों का एक सावन मास होता है।

Camlin Page

Day-8

तिथि - क्षय - वृद्धि

तिथि वृद्धि

एक चन्द्रमास में 30 तिथियाँ होती हैं। एक तिथि में 12° अन्तर इसलिए 30 तिथियों में 30×12 = 360° अन्तर। तिथि का आरम्भ सूर्योदय के बाद या पहले कभी भी हो सकता है। सूर्योदय के समय जो तिथि रहती है उस दिन वही तिथि मानी जाती है। सूर्योदय के समय यदि द्वितीया तिथि है तो उस दिन पञ्चाङ्ग में तिथि के स्थान पर 2 संख्या लिखी होती है। द्वितीया तिथि पूरे दिन-रात हो या न हो। सूर्योदय के कुछ ही देर बाद दूसरी तिथि शुरु हो जाय, फिर भी उस दिन उदयातिथि द्वितीया होने के कारण द्वितीया ही मानी जाती है। कभी-कभी सूर्य चन्द्र की गति के प्रभाव से तिथि का मान बढ़ जाता है तब ऐसा देखा जाता है कि सूर्योदय के थोड़ा पहले किसी तिथि का आरंभ होता है और दूसरे दिन सूर्योदय के थोड़ी देर बाद तक वह तिथि चल रही होती है।

इस प्रकार उस तिथि में दो बार सूर्योदय हो जाता है। एक बार आज और दूसरी बार कल। जैसे संलग्न पञ्चाङ्ग में वैशाख शुक्ल सोमवार को सूर्योदय के समय सप्तमी तिथि है और दूसरे दिन मंगलवार को भी सूर्योदय के समय सप्तमी तिथि है। इस प्रकार सोमवार एवं मंगलवार दोनों ही दिन सूर्योदय सप्तमी में ही हुए हैं।

इसलिए सप्तमी तिथि की वृद्धि मानी गई।

Camlin Page

तिथि - क्षय

अमावस्या को सूर्य और चन्द्र अपनी - अपनी कक्षा में अंशात्मक रूप से एक स्थान पर होते हैं और क्रमशः दूरी बदने के कारण प्रतिपदा, द्वितीया आदि तिथियाँ होती हैं। जब चंद्र की गति में कुछ अधिक शीघ्रता आ जाती है तब सूर्य और चन्द्र का अन्तर 12° कुछ जल्दी ही पूरा हो जाता है। परिणामतः तिथि का मान एक अहोरात्र से कुछ कम हो जाता है और वह तिथि दो सूर्योदयों के बीच ही बीत जाती है। उसमें सूर्योदय नहीं होने से पंचांग में वह तिथि नहीं लिखी जाती है। उसे ही तिथिक्षय कहा जाता है।

तिथि क्षय - वृद्धि का चित्र

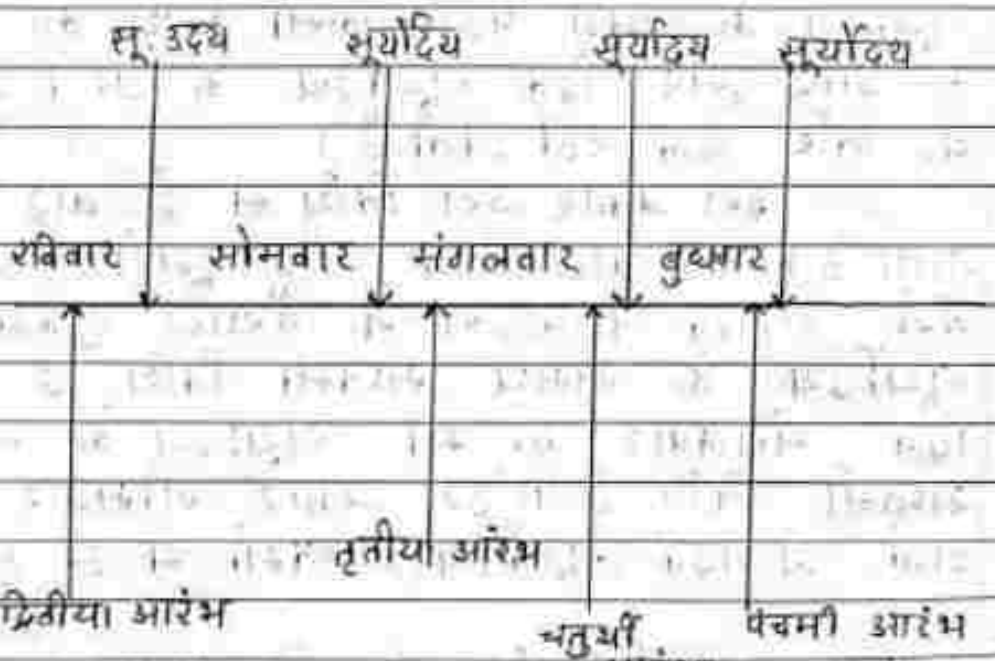

Day - 2

राशि परिचय

राशिर्नाम समूहः।
क्षेत्रं, गृहं, ऋक्षं, भः, भावश्चेत्याद्यस्तस्य पर्यायाः।
सम्पूर्णब्रह्माण्डे 360° परिमितमेकं भचक्रं विद्यते। यस्मिन्
द्वादश राशयः सन्ति।
यथा - मेषः, वृषः, मिथुनः, कर्कटः, सिंहः, कन्या,
तुला, वृश्चिकः, धनुः, मकरः, कुम्भः, मीनश्च।

राशियों की उत्पत्ति -
स्वच्छ रात्रि में आकाश की ओर देखने पर अनगिनत तारे दिखाई देते हैं। किन्तु इनको ध्यानपूर्वक देखने से ज्ञात होता है कि इनमें से कई तारे समूह में है। इन तारकसमूहों से एक विशेष प्रकार की आकृति बनती है। इसे 'तारामण्डल' (Constellation) कहते हैं। इन तारों द्वारा बनाई गई विशेष प्रकार की आकृतियों के आधार पर इनके विशेष नाम रख दिये गये हैं। तारों के इस प्रकार समूहों में बाँटकर अध्ययन करने से इनको पहचानने में सुविधा होती है।

राशीनाम् स्वामिनः

मेषवृश्चिकयोः मङ्गलः, वृषतुलयोः शुक्रः, कन्यामिथुनयोः बुधः,
कर्कस्य चन्द्रमा, सिंहस्य सूर्यः, धनुर्मीनयोः बृहस्पतिः,
मकरकुम्भयोः शनिः
इति द्वादशराशीनां स्वामिनो भवन्ति।

नक्षत्रवशाद् राशिज्ञानम्

	राशि नाम	राशयः नक्षत्रं चरणाक्षरश्च
१.	मेष	अश्विनी ४ चू चे चो ला। भरणी ४ ली लू ले लो। कृत्तिका १ अ।
२.	वृषभ	कृत्तिका ३ ई, ऊ ए। रोहिणी ४ ओ वा वी वु। मृगशीर्ष २ वे वो।
३.	मिथुन	मृगशीर्ष २ का की। आर्द्रा ४ कु घ ङ छ। पुनर्वसु ३ के को ह।
४.	कर्क	पुनर्वसु १ ही। पुष्य ४ हु हे हो डा। अश्लेषा ४ डी डू डे डो।
५.	सिंह	मघा ४ मा मी मू मे। पूर्वाफाल्गुनी ४ मो टा टी टू। उत्तरफाल्गुनी १ टे।
६.	कन्या	उत्तराफाल्गुनी ३ टो पा पी। हस्त ४ पू ष ण ठ। चित्रा २ पे, पो।
७.	तुला	चित्रा २ रा री। स्वाती ४ रू रे रो ता। विशाखा ३ ती तू ते।
८.	वृश्चिक	विशाखा १ तो। अनुराधा ४ ना नी नू ने। ज्येष्ठा ४ नो य यी यु
९.	धनु	मूल ४ ये ये भा भी। पूर्वाषाढा ४ भू ध फ ढ। उत्तराषाढा १ भे।
१०.	मकर	उत्तराषाढा ३ भो जा जी। श्रवण ४ खी खू खे खो। धनिष्ठा २ गा गी।
११.	कुम्भ	धनिष्ठा २ गू गे। शतभिषा ४ गो सा सी सू। पूर्वाभाद्रपदा ३ से सो दा।
१२.	मीन	पूर्वाभाद्रपदा १ दी। उत्तराभाद्रपदा ४ दू थ झ ञ। रेवती ४ दे दो चा ची।

Camlin Page

Day - 10

राशि - ज्ञानम

जन्म - राशि नाम

जन्म समय में जिस नक्षत्र के सामने चन्द्रमा होता है वह जातक का जन्म नक्षत्र कहलाता है।
और जन्म नक्षत्र के भी जिस चरण (प्रथम, द्वितीय, तृतीय या चतुर्थ) में चन्द्रमा विद्यमान रहता है, उस चरण के अनुसार जातक के जन्मपत्री में उसका नाम रखा जाता है। नक्षत्रों के चरणों के अलग - अलग एक - एक अक्षर का नाम है।
जैसे - चू चे चो ल = अश्विनी आदि। इन्हीं अक्षरों के आधार से जातक का नाम रखा जाता है।
जिसे राशिनाम से जाना जाता है। इसलिए यदि किसी का जन्म अश्विनी के प्रथम चरण में है तो उसका नाम अश्विनी के प्रथम अक्षर 'चु' से रखा जायगा। इसी तरह द्वितीय चरण में जन्म होने से 'चे' अक्षर पर, तृतीय में 'चो' से नाम रखा जाता है।

राशियों के नामकरण का आधार

बारह राशियों के नामकरण भी नक्षत्र के जैसे इनकी आकृतियों के अनुसार ही किया गया है।
जैसे नक्षत्रमण्डल का प्रथम द्वादशांग भाग भेड़ (मेष) की आकृति का होने के कारण इसे मेष कहा गया। जो भाग बैल की आकृति का प्रतीत हुआ उसे वृष कहा गया। इस तरह बारह भागों के नाम इनकी आकृति के अनुसार ही रखे गये हैं।

द्वादश भाव

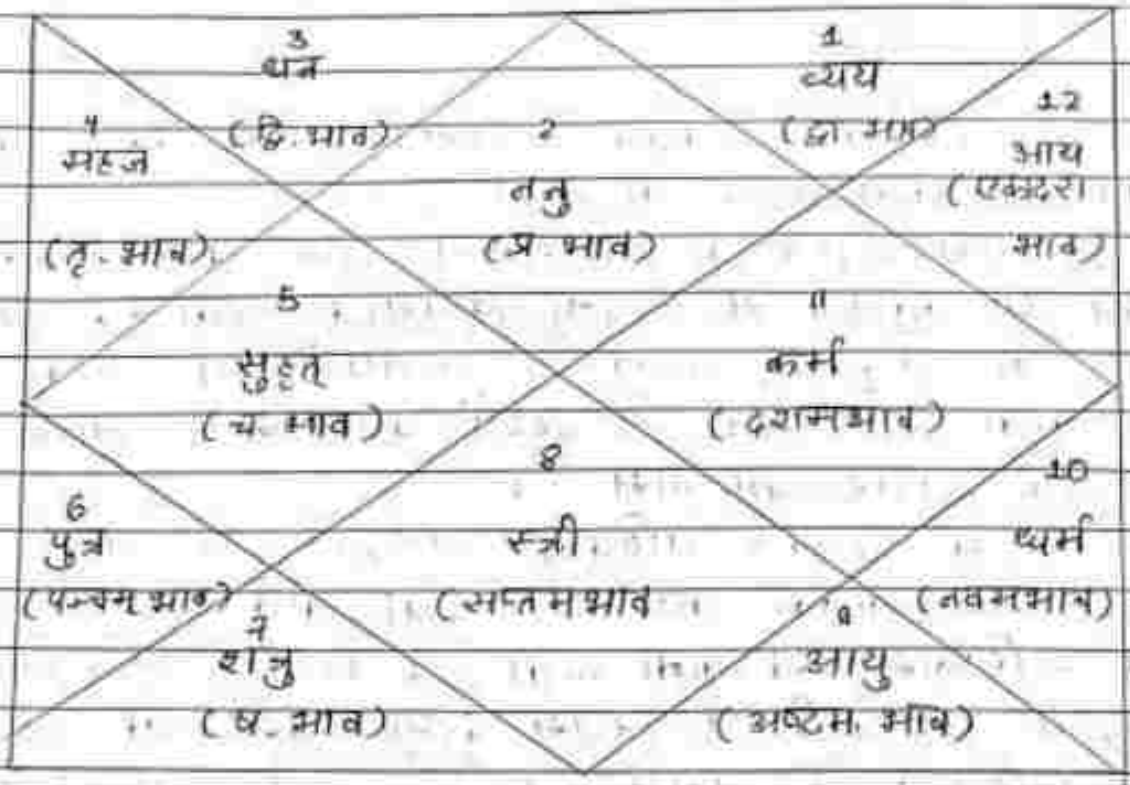

शुभ और अशुभ भाव

शुभ भाव 1, 2, 4, 5, 7, 9, 10 एवं 11 वाँ भाव शुभ माने जाते हैं।
उसमे भी 1, 5, 9 सर्वदा शुभ होते हैं और शेष में परिस्थितिवश अन्तर भी आया करता है।

अशुभ भाव 3, 6, 8 और 12 वाँ भाव अशुभ भाव है।

Day - 11

ग्रह - परिचय:

फलित ज्योतिष मे सूर्य, चन्द्र, मङ्गल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु - इन सबों को ग्रह संज्ञा दी गई है।

शुभग्रह (नैसर्गिक)

पूर्णचन्द्र, गुरु और शुक्र शुभग्रह हैं। बुध यदि पापग्रह के साथ न हो तो वह भी शुभग्रह की श्रेणी में आता है।

पापग्रह (नैसर्गिक)

क्षीणचन्द्र, पापग्रह से युत बुध, सूर्य, मंगल, शनि, राहु और केतु पापग्रह कहलाते हैं।

शुभग्रह और पापग्रह (तात्कालिक)

पूर्व में शुभग्रह एवं पापग्रह का विचार किया जा चुका है। किन्तु लग्न के अनुसार पापग्रह भी शुभग्रह की तरह और शुभग्रह भी पापग्रह की तरह फल दिया करता है। यह लग्न और ग्रहों के विभिन्न प्रकार के सम्बन्ध पर निर्भर करता है। इसका विवेचन लग्न एवं लग्नानुसार जातक के व्यक्तित्व के अनुच्छेद में है।

पूर्णचन्द्र

यद्यपि चन्द्रमा पूर्ण तो पूर्णमासी को ही होता है किन्तु

Camlin Page

Day - 11

ग्रह - परिचय:

फलित ज्योतिष मे सूर्य, चन्द्र, मङ्गल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु - इन सबों को ग्रह संज्ञा दी गई है।

शुभग्रह (नैसर्गिक)

पूर्णचन्द्र, गुरु और शुक्र शुभग्रह हैं। बुध यदि पापग्रह के साथ न हो तो वह भी शुभग्रह की श्रेणी में आता है।

पापग्रह (नैसर्गिक)

क्षीणचन्द्र, पापग्रह से युत बुध, सूर्य, मंगल, शनि, राहु और केतु पापग्रह कहलाते हैं।

शुभग्रह और पापग्रह (तात्कालिक)

पूर्व में शुभग्रह एवं पापग्रह का विचार किया जा चुका है। किन्तु लग्न के अनुसार पापग्रह भी शुभग्रह की तरह और शुभग्रह भी पापग्रह की तरह फल दिया करता है। यह लग्न और ग्रहों के विभिन्न प्रकार के सम्बन्ध पर निर्भर करता है। इसका विवेचन लग्न एवं लग्नानुसार जातक के व्यक्तित्व के अनुच्छेद में है।

पूर्णचन्द्र

यद्यपि चन्द्रमा पूर्ण तो पूर्णमासी को ही होता है किन्तु

फलादेश की दृष्टि से शुक्लपक्ष की अष्टमी से कृष्णपक्ष की सप्तमी तक चन्द्रमा पूर्ण माना जाता है। कुछ विद्वानों का मत है कि शुक्ल पञ्चमी से कृष्ण पञ्चमी तक या वर्द्धमान चन्द्र पूर्ण माना जाता है।

क्षीणचन्द्र

कृष्णपक्ष की पञ्चमी तिथि से शुक्ल पक्ष की पञ्चमी तक या कृष्णपक्ष की अष्टमी से शुक्लपक्ष की सप्तमी तक या, घटता हुआ चन्द्र क्षीण चन्द्र माना जाता है।

चन्द्र और बुध का विशेष शुभत्व

क्षीणचन्द्र यदि बुध के साथ हो जाता है तो दोनों ही शुभफल देते हैं। अर्थात दोनों शुभग्रह माने जाते हैं। यहाँ क्षीणचन्द्र पापग्रह है। पापग्रह के साथ स्थित बुध पापग्रह हो जाता है। किन्तु यह अपवाद है कि इस स्थिति में न तो चन्द्र पापग्रह होता है और न ही बुध।

Day - 22

ग्रहों का तात्त्विक विवेचन

सूर्य

आत्मा का कारक, राजसीग्रह, अधिदेवता अग्नि, पुरुषग्रह क्षत्रियसंज्ञक, सत्त्वगुणी, तात्विक दृष्टि से अस्थि का कारक और रक्तवर्णवाला होता है।

चन्द्र

मन का कारक, राजसी प्रवृत्ति वाला, अधिदेवता जल, स्त्री संज्ञक, वैश्य प्रकृति, सत्त्वगुणप्रधान और श्वेतरेशम वर्ण है।

मंगल

सामर्थ्यकारक, नेतृत्व शक्ति प्रधान, अधिदेवता गणेश, पुरुषग्रह, तमोगुणी, निवास स्थान अग्नि और रक्तवर्णवाला है।

बुध

वाणीकारक, राजकुमारत्वगुणसम्पन्न, अधिदेवता विष्णु, नपुंसकग्रह प्रश्नीतत्त्वप्रधान, कृष्ण रेशम वर्णवाला और निवास क्रीडाग्रह में है।

गुरु

ज्ञान और सुख का कारक, सचिवत्व या मन्त्रशक्ति सम्पन्न, अधिदेवता ब्रह्म, मधुरस प्रधान कोषागार में निवास और पीतवर्णवाला गुरु का स्वरूप है।

शुक्र - कार्य का कारक, सचिवत्व, एवं मन्त्रणाशक्तिसम्पन्न, अधिदेवता इन्द्र, अम्ल रस प्रधान, शय्या में निवास और रेशम व

शनि - दुःख का कारक, तौकाप्रकृति, अधिदेवता इन्द्राणी, नपुंसक संज्ञक, कषाय रस प्रधान और रंगाविरंगावर्णवाला है।

राहु - सेना तथा अन्य तत्व दृष्टि और युति के अनुसार।

केतु - सेना तथा अन्य तत्व दृष्टि एवं युति के अनुसार।

ग्रह मैत्री - ग्रहों की प्रकृति के आधार पर जो एक ग्रह का दूसरे ग्रह से उत्पन्न भाव है उसे नैसर्गिक मैत्री, शत्रुता या समता कहते हैं। और जन्मकालिक स्थिति वश जो भाव उत्पन्न होते हैं उसे तात्कालिक मैत्री और शत्रुता कहते हैं।
इस तरह मैत्री के दो प्रकार हुए नैसर्गिक और तात्कालिक। इन दोनों के सम्बन्ध में पञ्चधा मैत्री उत्पन्न होती है।

पञ्चधा मैत्री विचार

	नैसर्गिक	+ तात्कालिक	= पञ्चधा
1.	मित्र	मित्र	अधिमित्र
2.	सम	मित्र	मित्र
3.	शत्रु	मित्र	सम
4.	शत्रु	शत्रु	अधिशत्रु
5.	सम	शत्रु	शत्रु

Day - 13

लग्न निर्धारण

लोकभाषा में लग्न का सैद्धान्तिक तात्पर्य

पृथ्वी को अपनी धुरी पर एक बार चारों तरफ घूमने में (स्वाङ्गभ्रमण में) लगभग 24 घण्टे लगते हैं और अपनी कक्षा (क्रान्तिवृत्त) में भ्रमण करने में 365 दिन 15 घटी 30 पल 22 विपल और 30 प्रति विपल अर्थात् एक सौर वर्ष लगता है।
(सूक्ष्मगणित) द्वारा यह समय 24 घण्टे से अत्यल्प अन्तरित भी जान पड़ता है।
समस्त सौर मण्डल बारह राशियों में विभाजित है। पृथ्वी के दैनिक भ्रमण (स्वाङ्ग भ्रमण) के क्रम में जन्मसमय में जन्मस्थान सौरमण्डल के जिस राशि के सामने रहता है व उस समय उत्पन्न बच्चे का लग्न वही राशि माना जाता है।
और उस राशि के स्वामी ग्रह ही उस लग्न का स्वामीग्रह हुआ करता है। जिसके कारण फलादेश की व्यवस्था की दृष्टि से शुभग्रहों में भी पापतत्त्व और पापग्रहों में भी शुभत्त्व आ जाया करता है। इसका विशेष विवेचन इसी प्रकरण में आगे यथास्थान किया जाएगा।

* लग्न-साधन

प्रत्येक पञ्चाङ्ग में दैनिक लग्नसारिणी चक्र दिया होता है। सलग्न पञ्चाङ्ग पृ. सं 51 में जो लग्नसारिणी चक्र दिया गया है उसमें बाँई

ओर कोने पर ऊपर में ति.वा. लिखा है। यह तिथि और वार का बोध कराता है। उसके नीचे मेष, वृष, मिथुन आदि बारहों लग्नों के नाम लिखे हैं। ति वा के दाहिने क्रमशः तिथियों और दिनों के नाम लिखे हैं।
जैसे - 1 मं = प्रतिपदा मंगलवार।

1. वैशाखशुक्ल प्रतिपदा मंगलवार को दिन में 8 बजे किसी बालक का जन्म हुआ। लग्न ज्ञात करें।

वैशाखशुक्ल पक्ष के दैनिक लग्नसारिणी में बाँई ओर ऊपर कोने पर ति. वा. के दाहिने 1 मं लिखा है और उसके नीचे घण्टा, मिनट लिखे हैं। घं. मि. के नीचे 6।53 लिखा है। 6।53 के ठीक बाँई ओर मेष लग्न लिखा है।
अर्थात प्रातः 6।53 तक मेष लग्न चल रहा था। उसके नीचे वृष लग्न लिखा है और दाहिने ओर 8।51 लिखा है। अर्थात 6।53 तक मेष लग्न था। 6।54 से वृष का आरंभ हुआ जो 8।51 तक चला। बालक का जन्म 8.00 बजे हुआ है।

वृष लग्न प्रातः 6।54 से 8।51 तक है। इसी बीच जन्म हुआ अतः वृष लग्न में जन्म हुआ।

लग्नानुसार जातक का व्यक्तित्व

जन्मपत्र के आधार पर जातक के कायिक, वाचिक और मानसिक चरित्र का विश्लेषण एवं दैहिक, दैविक और भौतिक समृद्धि का विश्लेषण करने के सन्दर्भ में लग्न का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्थान है।

Camlin Page

Day - 14

जातक का व्यक्तित्व

★ मेष लग्न का जातक
इसका लग्नेश मंगल है। इस जातक का व्यक्तित्व अधिकांशतः पराक्रमी, साहसी, स्पष्टवादी, ऊधमी, मेधावी आदि हुआ करता है।

★ वृष लग्न का जातक
इसका लग्नेश शुक्र होता है। इसका जातक स्वार्थपूर्ण, विवेकपूर्ण, स्वाभिमानी, सांसारिक व्यवहार में कुशल, मृदुभाषी आदि होता है।

★ मिथुन लग्न का जातक
इसका लग्नेश बुध होता है। इसका जातक उत्तमवक्ता, कलाप्रेमी वार्तालाप दक्ष लिखने-पढ़ने में रुचि, कुशाग्रबुद्धि वाला होता है।

★ कर्क लग्न का जातक
इसका लग्नेश चन्द्रमा है। इसका जातक जिज्ञासु, प्रगल्भ भावुक, अति आत्मविश्वास कर्तव्यनिष्ठ, मितव्ययी आदि हुआ करता है।

★ सिंह लग्न का जातक
इसका लग्नेश सूर्य है। इस लग्न का जातक आनंदप्रिय, शत्रु पर विजय पाने वाला स्पष्टवादी धैर्यवान, सूझ-बूझ से काम करने वाला व्यक्ति होता है।

★ कन्या लग्न का जातक
इसका लग्नेश बुध है। ~~इन~~ इस लग्न का जातक प्रखरबुद्धि वाला, मन्त्रणा शक्ति से युक्त, अध्ययन में रुचि रखने वाला,

कम आत्मबल वाला तथा किसी से भी जल्दी प्रभावित होने वाला हुआ करता है।

* तुला लग्न - इसका लग्नेश शुक्र है। इसका जातक आदर्शवादी आशावादी, उदार, हँसमुख, न्यायप्रिय आदि हुआ करता है।

* वृश्चिक लग्न - इसका लग्नेश मंगल है। इसका जातक स्वाधीन, बहुत अच्छा मित्र किंतु उससे भी अच्छा शत्रु, प्रतिशोध लेने में निपुण, सतर्क, अपने विरुद्ध विचार प्रकट करने वाले आत्मीयो को भी शत्रु समझने वाला हुआ करता है

* धनु लग्न - इसका लग्नेश गुरु है। यह दार्शनिक, मानवीयता -पूर्ण, सात्विक बुद्धि वाला भला आदमी, अपने अधीनस्थ व्यक्तियों के प्रति उदार तथा दयावान होता है।

* मकर लग्न - इसका लग्नेश शनि है। यह डरपोक, सीधा-साधा, धर्मनिष्ठ, कार्य साधने के लिए कुछ भी करने में समर्थ और परिस्थिति अनुसार स्वयं को ढालने में समर्थ होता है।

* कुम्भ लग्न - इसका लग्नेश शनि है। इसका जातक गम्भीर प्रकृति का कोमल किंतु लोभी हृदयी सहायता करने में अग्रसर बुद्धिमान, अपने अनुकूल परिस्थिति न होने पर संतुलन भी खो सकता है।

* मीन लग्न - इसका लग्नेश गुरु होता है। इसका जातक प्रखरबुद्धि वाला, अच्छी स्मरणशक्ति वाला न्यायप्रिय, विश्वासपात्र, चतुर आदि होता है।

Day - 15

मुहूर्त परिचय :

पंचकज्ञानम्

धनिष्ठानक्षत्रस्य उत्तरार्धात् रेवतीनक्षत्रपर्यन्तं सार्धचतुष्टय-नक्षत्राणां कालः पञ्चकः भवति।
एतस्मिन् काले दक्षिणदिशि यात्रा, भवनस्य छादिनिर्माणं, प्रेतदाहः तृणकाष्ठसंग्रहः शय्यावितननं च अशुभं भवति।

वस्त्रादि-धारण मुहूर्तः

रेवती, ध्रुवः, अश्विनी, हस्तादि पञ्च नक्षत्राणि (हस्तः, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा चेति पञ्च) धनिष्ठा पुष्यः इति एतेषु दशसु नक्षत्रेषु शनिवासरं, चन्द्रवासरं, मङ्गलवासरञ्च तथा रिक्तातिथिं (चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी च) विहाय प्रवालरत्नदन्तसुवर्णाभूषणानि वस्त्राणि च धारणीयानि।
सौभाग्यवती नारी उत्तराफाल्गुनी - उत्तराषाढा - उत्तराभाद्रपदा - रोहिणी - पुनर्वसु - पुष्यनक्षत्रेषु नूतनवस्त्रादीनां धारणं न कुर्यात्।

लतापादपरोप - मुहूर्तः

विशाखा, मूलः, मृदुसंज्ञकाः (मृगशीर्ष रेवती चित्रा अनुराधा इत्येतानि मृदुसंज्ञक नक्षत्राणि) शतभिषा क्षिप्रसंज्ञकः (हस्तः अश्विनी पुष्य अभिजित् इत्येतानि क्षिप्रसंज्ञकानि) चेत्येषु एकादशसु नक्षत्रेषु लतावृक्षाणां रोपणं फलदो भवति।

पञ्चपर्वाणि

चतुर्दशी, अष्टमी, अमावस्या, पूर्णिमा एताः नवग्रः तिथयः तथा प्रतिमासे सूर्यसंक्रान्तिः इति पंचपर्वाणि भवन्ति।

व्याख्यम् :- एतेषां पर्वाणां उपयोगः अत्यावश्यकेषु दानादिकार्येषु प्रयुज्यते।

परिशिष्टम्

ज्योतिषशास्त्रवाङ्मयम् -
कल्पवृक्षात्मकमिदं ज्योतिषशास्त्रं गणितफलितविभागेन द्विविधम्। ग्रहनक्षत्राणां गति - स्थिति - अयनांश - कालादिविचारो यत्र विद्यते तद्गणितस्कन्धः। शुभाशुभसमयानां निर्धारणं, योगादिकार्याणां समयनिर्धारणादिकं फलितभागान्तर्गतं वर्तते।

वेदस्य षडङ्गवत् ज्योतिषशास्त्रस्यापि षडङ्गानि वर्तन्ते :-
① जातक ② गोल ③ निमित्त ④ प्रश्न ⑤ मुहूर्त ⑥ गणित

गोलगणिताङ्गयोरन्तर्भावः गणिते वा सिद्धान्तस्कन्धे भवति। जातकप्रश्नमुहूर्तभागाः होरास्कन्धे ऽन्तर्भवन्ति। अन्तिमाङ्गत्वेन निमित्तः संहितास्कन्धे गण्यते।

इति शुभम्॥

Annexure

Internship Report

A report submitted in partial fulfillment for the Award of Degree of
Shastri 2nd Semester

By

Name of the Student: Deepali Jain
Enrollment No.: S/22-23/104

Under the Supervision of
Dr. Keerti Sharma
ज्योतिष वेद वेदाङ्ग संस्कृत संस्थानं जयपुर
Name of the Campus/ Institute/Organisation
(Duration: - from 1/8/2023 to 16/8/2023)

CENTRAL SANSKRIT UNIVERSITY

56-57, Institutional Area, Janakpuri, New Delhi-110058

1) ज्योतिष शास्त्र का परिचय

यज्ञ, तप, दानादि के द्वारा ईश्वर की उपासना वेद का लक्ष्य है। अतः इसे वेदाङ्ग की संज्ञा दी गई है। व्याकरण, ज्योतिष, निरुक्त, कल्प, शिक्षा और छंद ये छह वेद के अङ्ग कहे गए हैं जिसमें ज्योतिष वेद रूपी पुरुष के नेत्र रूपी अङ्ग के रूप में प्रसिद्ध है।

ज्योतिष शास्त्र में मुख्यतः ग्रह, नक्षत्र, तारा, उल्का आदि के विषय में साङ्गोपाङ्ग अध्ययन किया जाता है। इस ब्रह्माण्ड ब्रह्माण्ड में जो भी चराचर जीव है उनमें पञ्चमहाभूत, तीन - गुण, सात प्रकार की धातुएँ आदि ग्रहनक्षत्रादि के प्रभाव से रहते है। इनमें से किसी में पार्थिवत्व अधिक पाया जाता है तो किसी में जल की मात्रा, किसी में अग्नितत्व, किसी में वायु या आकाश तत्व अधिक पाया जाता है।

कोई लम्बा होता है, कोई नाटा तो कोई लंगडा तो कोई काणा होता है। यह सभी विषमताएँ ग्रहयोगबल के कारण ही संभव है। जिस जातक का प्राक्तन कर्म जैसा रहता है वह उस तरह के ग्रहयोग में उत्पन्न होकर जीवनभर कर्मानुसार शुभाशुभ फल का भोग करता रहता है। इन विषयो से सम्बन्ध सिद्धान्तों का ऋषि - महर्षियों ने प्रवर्तन किया।

आचार्यों ने ज्योतिष शास्त्र को तीन भागों में बाँटा हैं - जिन्हें स्कन्ध कहते हैं।

- 1) सिद्धान्त
  2) संहिता
  3) होरा

1) सिद्धान्त =>

ग्रह नक्षत्र संबंधी छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी समस्त प्रकार की गणना का विधान जिस स्कन्ध में हो वह सिद्धान्त कहलाता है।

2) संहिता => ग्रह नक्षत्रादि के गति स्थिति आदि के आधार पर सामूहिक शुभाशुभ घटनाओं का अध्ययन जिस स्कन्ध में हो वह संहिता है।

3) होरा => ग्रह-नक्षत्रादि के प्रभाव से व्यक्तिगत जीवन की शुभाशुभ घटना का अध्ययन जिस स्कन्ध में हो वह होरा है।

प्रयोजन –

1) ज्योतिषशास्त्र के वेदाङ्गत्व का ज्ञान हो सकेगा।
2) आजकल ज्योतिषशास्त्र की क्या स्थिति है इसका ज्ञान होगा।
3) सिद्धान्त, संहिता और होरा स्कन्धों का परिचय प्राप्त होगा।

प्रवर्तक –

वैसे तो वेद किसी शास्त्र विशेष का ग्रन्थ नहीं है। इसमें सभी शास्त्रों का दिग्दर्शन है। ज्योतिष तो वेदाङ्ग है ही तो इस तरह ज्योतिष शास्त्र का प्रवर्तक सर्वप्रथम वेद ही हुए परंतु कालक्रम के आधार पर जिनको श्रेय दिया जाता है उनमें मुख्य हैं –

1) सूर्य, 2) पितामह, 3) व्यास, 4) वशिष्ठ, 5) अत्रि, 6) पराशर, 7) कश्यप, 8) नारद, 9) गर्ग, 10) मरीचि आदि

आचार्य परम्परा

1) वैदिक काल => विभिन्न वेदों, ब्राह्मणों, आरण्यकों, उपनिषदों, स्मृतियों आदि में प्रसंगवश ज्योतिषशास्त्र के सभी स्कन्धों के विषय के उल्लेख मिलते हैं।

2) वेदाङ्ग काल => इस समय वेदाङ्ग ज्योतिष का प्रचार - प्रसार था। जिसके रचयिता महात्मा लगध माने जाते है। इस समय अध्ययन - अध्यापन की परम्परा अधिक थी।

3) सिद्धान्त काल => इस समय अनेक आचार्य हुए, जिन्होंने ज्योतिष के विभिन्न स्कन्धों या एक स्कन्ध में अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य किया। उनमें प्रमुख हैं -
1. आर्यभट्ट, 2. वराहमिहिर, 3. ब्रह्मगुप्त, 4. श्रीधराचार्य, 5. कालिदास, 6. भोजराज, 7. भास्कर, 8. बलभद्र, 9. केशव, 10. गणेश।

4) आधुनिक काल => इस काल में अनेक विशिष्ट आचार्य हुए। अध्ययन - अध्यापन परम्परा सुदृढ़ थी। आचार्यों ने अनेक ग्रन्थ लिखे। जिनमें से कुछ आचार्यों के नाम हैं -
1. नन्दलाल शर्मा, 2. राघव, 3. रघुनाथ आचार्य, 4. बालगङ्गाधर तिलक, 5. कृष्णशास्त्री गोडबोले।

5.) वर्तमान काल => इस काल में अध्ययन - अध्यापन एवं शोध विभिन्न संस्कृत विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों आदि में चल रहा है। इस समय ज्योतिष शास्त्र के तीनों स्कन्धों में अच्छे विद्वान हुए हैं। उनमें प्रमुख हैं -
1. आचार्य अवध विहारी त्रिपाठी, 2. आचार्य केदार दत्त जोशी, 3. आचार्य राजमोहन उपाध्याय, 4. आचार्य शम व्यास पाण्डेय, 5. आचार्य रामचन्द्र पाण्डेय।

पञ्चाङ्ग प्रकरण

पञ्चाङ्ग परिभाषा -

" तिथिवारं च नक्षत्रं योगः करणमेव च।
पञ्चाङ्गस्यैतान्यङ्गानि कथितानि महर्षिभिः ॥"

तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण ये पांच अङ्ग है, इन्हीं से मिलकर 'पञ्चाङ्ग' का निर्माण होता है।

1. तिथि => सूर्य और चन्द्रमा जब 12 अंश की दूरी पर होता है तब 1 तिथि का निर्माण होता है।
तिथि 15/16 होती हैं -
1. प्रतिपदा 2. द्वितीया 3. तृतीया 4. चतुर्थी 5. पञ्चमी
6. षष्ठी 7. सप्तमी 8. अष्टमी 9. नवमी 10. दशमी
11. एकादशी 12. द्वादशी 13. त्रयोदशी 14. चतुर्दशी
15. कृष्णपक्षे अमावस्या तथा च 16. शुक्लपक्षे पूर्णिमा।

2. वार => दिन का नाम उस ग्रह के नाम पर रखा जाता गया है, जो वार के आरम्भ में पहले घण्टे का स्वामी होता है। वार का निर्धारण ज्ञान अथर्ववेद से प्राप्त होता है।
1. रवि 2. सोम 3. मंगल 4. बुध 5. गुरु
6. शुक्र 7. शनि।

3. नक्षत्र => आकाश में क्रांतिवृत्तीय तारा-मण्डल को बराबर 27 भागों में विभाजित करने पर एक-एक खण्ड एक-एक नक्षत्र के कहे जाते हैं। वे ही 27 नक्षत्र हैं।
" न क्षरतीति नक्षत्रम।"

1. अश्विनी	2. भरणी	3. कृतिका	4. रोहिणी
5. मृगशीर्ष	6. आर्द्रा	7. पुनर्वसु	8. पुष्य
9. आश्लेषा	10. मघा	11. पूर्वाफाल्गुनी	12. उत्तराफाल्गुनी
13. हस्त	14. चित्रा	15. स्वाती	16. विशाखा
17. अनुराधा	18. ज्येष्ठा	19. मूल	20. पूर्वाषाढा
21. उत्तराषाढा	22. श्रवण	23. धनिष्ठा	24. शतभिषा
25. पूर्वाभाद्रपदा	26. उत्तराभाद्रपदा	27. रेवती	इति ।

4. योग => सूर्य तथा चन्द्र की दैनिक गति योग है। इन्हे विष्कम्भादि योग कहते है ये 27 होते है।

1. विष्कम्भ	2. प्रीति	3. आयुष्मान	4. सौभाग्य
5. शोभन	6. अतिगण्ड	7. सुकर्मा	8. धृति
9. शूल	10. गण्ड	11. वृद्धि	12. ध्रुव
13. व्याघात	14. हर्षण	15. वज्र	16. सिद्धि
17. व्यतीपात	18. वरीयान	19. परिघ	20. शिव
21. सिद्ध	22. साध्य	23. शुभ	24. शुक्ल
25. ब्रह्म	26. ऐन्द्र	27. वैधृति ।	

5. करण => "तिथ्यर्धं करणं"।
तिथि के आधे भाग को करण कहते है। एक तिथि में दो करण होते है। यह 11 होते है -

1. बव	2. बालव	3. कौलव	4. तैतिल
5. गर	6. वणिज	7. विष्टि	8. शकुनी
9. चतुष्पद	10. नाग	11. किंस्तुघ्नम् ।	

प्रयोजन -
1. दिन के स्वरूप तथा तिथि के स्वरूप का ज्ञान हो सकेगा।
2. नक्षत्र तथा अभिजित नक्षत्र का ज्ञान हो सकेगा।
3. विष्कम्भादि तथा गण्ड और आनन्दादि योग का ज्ञान होगा।
4. करण तथा करण विशेष (भद्रा) का ज्ञान होगा।

वार , वार निर्धारण , योगादि

- **वार** => दिन सात होते हैं। ये हैं - रविवार , सोमवार , मंगलवार , बुधवार , गुरुवार , शुक्रवार , शनिवार। जो वार के आरम्भ में पहले घण्टे का स्वामी होता है वही उस दिन का भी स्वामी होता है एवं उसी के नाम पर दिन का नामकरण होता है। जैसे - रविवार का नाम इसलिए पड़ा क्योंकि उस दिन के पहले घण्टे का स्वामी रवि (सूर्य) होता है।

- **वार निर्धारण** => यदि पहले घण्टे का स्वामी शनि है, तो दूसरे का बृहस्पति, तीसरे का मंगल, चौथे का सूर्य, 5वें का शुक्र, 6वें का बुध, 7वें का चन्द्र, 8वें का शनि इत्यादि क्रमानुसार है। पहले ही कह चुके हैं कि पहले घण्टे का स्वामी शनि है तो वह दिन शनिवार है। शनिवार के 2 घण्टे का बृहस्पति इत्यादि इस तरह से 7 - 7 घण्टे पर स्वामियों का वही क्रम फिर से आता है। शनिवार को 24 वे घण्टे का स्वामी मङ्गल तथा 25 वे का सूर्य (रवि) होता है तदनुसार शनिवार के दूसरे दिन पहले घण्टे का स्वामी सूर्य है और उसी के आधार पर शनिवार के बाद का दिन रविवार होता है।

उपरोक्त प्रकार से स्पष्ट हो जाता है कि रविवार के बाद सोमवार और मंगलवार इत्यादि क्यों आते हैं? क्योंकि 24 घण्टे का अहोरात्र है। सात वार हैं। इसकी तीन आवृत्तियाँ होती हैं $24 \div 7 = 3$ प्रतिदिन सातो ग्रहों की तीन - तीन आवृतियाँ होती हैं चौथी आवृति के लिए सिर्फ तीन घण्टे बचे होते हैं चौथे घण्टे में अगला दिन आ जाता है। इस प्रकार दिन के स्वामी के नाम पर यह क्रम है यदि ऐसा न हो तो कभी रविवार तो कभी शनिवार तो कभी बुधवार आ जाने की संभावना होती।

योग → सूर्य और चन्द्रमा के गति योग से 27 योग बनते हैं | सूर्य और चन्द्र के दैनिक गति योग को योग कहते हैं | इनकी संख्या 27 है |

$360° \div 27 = 13°, 20' = 800'$ = एक योग |

नक्षत्र , नाम , स्वामी , चरण

नक्षत्र → "न क्षरतीति नक्षत्रम् |
ऋषियों ने क्रान्तिवृत्त के क्षेत्र में स्थित तारों को पूर्व - पूर्व क्रम से सत्ताइस भागों में बाँटा है जिसका मान 13 अंश 20 कला है और उसे नक्षत्र संज्ञा दी है | इस तरह एक नक्षत्र में कई तारे आ जाते हैं | उन तारों को कल्पित रेखाओं से परस्पर युक्तिपूर्वक जोड़ने से विभिन्न प्रकार की सार्थक आकृतियाँ बनती हैं | उन्हीं आकृतियों के आधार पर उन - उन भागों का क्रमशः अश्विनी, भरणी इत्यादि नामकरण किया गया है |

नक्षत्र के नाम	स्वामी	नक्षत्र के नाम	स्वामी
अश्विनी	अश्विनी कुमार	हस्त	प्रजापति
भरणी	यम	चित्रा	वायु
कृत्तिका	अग्नि	स्वाती	इन्द्राग्नि
रोहिणी	ब्रह्मा	विशाखा	मित्र
मृगशीर्ष	चन्द्रमा	अनुराधा	इन्द्र
आर्द्रा	शिव	ज्येष्ठा	राक्षस
पुनर्वसु	अदिति	मूल	जल
पुष्य	बृहस्पति	पूर्वाषाढ़ा	विश्वदेव
आश्लेषा	सूर्य	उत्तराषाढ़ा	ब्रह्मा
मघा	पितर भगनायकसूर्य	श्रवण	विष्णु
पूर्वाफाल्गुनी	अर्यमा	धनिष्ठा	वसुगुण
उत्तराफाल्गुनी	सूर्य	शतभिषा	वरुण
पूर्वाभाद्रपदा	अजचरण	उत्तराभाद्रपदा	अहिर्बुध्न्य नामकसूर्य
रेवती	पूषा नामक सूर्य		

नक्षत्र - चरण

एक नक्षत्र की लम्बाई बहुत अधिक होने के कारण प्राचीनाचार्यों ने खण्डों, उपखण्डों आदि में इसके विभाजन किये है। जिससे सूक्ष्मरूप से जाना जा सके ग्रह उस नक्षत्र में भी किस बिन्दु पर है? इस प्रकार प्रत्येक नक्षत्र को चार-चार भागों में विभाजित किया गया है और उन प्रत्येक विभागों को नक्षत्र का चरण कहते हैं। एक नक्षत्र में चार चरण होते हैं।
27 नक्षत्रों में $27 \times 4 = 108$ चरण होते हैं।

योग और करण

योग => सूर्य तथा चन्द्रमा के गति योग से 27 योग बनते हैं। इन्हे विष्कम्भादि योग कहा जाता है। इनके आधार सूर्य तथा चन्द्र हैं। स्वतन्त्र कोई गोलीय बिन्दु नहीं है। सूर्य तथा चन्द्र की दैनिक गति योग को योग कहते हैं। यह 27 होते है।

$360^\circ \div 27 = 13^\circ, 20^\circ = 800'$ = एक योग

1. विष्कम्भ	2. प्रीति	3. आयुष्मान्	4. सौभाग्य
5. शोभन	6. अतिगण्ड	7. सुकर्मा	8. धृति
9. शूल	10. गण्ड	11. वृद्धि	12. ध्रुव
13. व्याघात	14. हर्षण	15. वज्र	16. सिद्धि
17. व्यतीपात	18. वरीयान्	19. परिघ	20. शिव
21. सिद्ध	22. साध्य	23. शुभ	24. शुक्ल
25. ब्रह्म	26. ऐन्द्र	27. वैधृति	

आनन्दादि योग => ये आनन्दादि योग विष्कम्भादि से भिन्न हैं। ये आनन्दादि 28 है। दिन + नक्षत्र (चान्द्र) के योग से ये उत्पन्न होते हैं। इन योगों के प्रभाव भी इनके नाम के अनुसार हैं। इनके नाम इस प्रकार हैं –

1. आनन्द 2. कालदण्ड 3. धुम्र 4. धाता 5. सौम्य
6. ध्वांक्ष 7. केतु 8. श्रीवत्स 9. वज्र 10. मुद्गर
11. छत्र 12. मित्र 13. मानस 14. पद्म 15. लुम्ब
16. उत्पात 17. मृत्यु 18. काण 19. सिद्धि 20. शुभ
21. अमृत 22. मुसल 23. गद 24. मातंग 25. रक्ष
26. चर 27. सुस्थिर 28. प्रवर्धमान।

ये नाम के अनुसार फल देते हैं। आनन्दादि योगों में 2, 3, 6, 7, 9, 10, 16, 17, 18, 22, 23 संख्या वाले शुभ कर्म में त्याज्य हैं।

1, 4, 5, 8, 11, 12, 13, 14, 15, 19, 20, 21, 24, 25, 26, 27, 28 नाम संख्या वाले योग सदृश शुभप्रद तथा कार्यसिद्धि प्रदायक हैं।

करण => "तिथ्यर्धं करणम्।"

तिथि के आधे भाग को करण कहते हैं अर्थात एक तिथि में दो करण होते हैं। सूर्य से चन्द्रमा के 6 अंश का अन्तर ही एक करण का कारण बनता है। अतः चन्द्रमास के अनुसार 1 महीने में 60 करण होते हैं। कुल 11 करण हैं जिसमें 7 करण चर संज्ञक है तथा 4 करण स्थिर संज्ञक हैं। इन 11 करणों के नाम इस प्रकार है।

1. बव 2. बालव 3. कौलव 4. तैतिल 5. गर
6. वणिज 7. विष्टि 8. शकुनि 9. चतुष्पद 10. नाग
11. किंस्तुघ्न।

बव से विष्टि तक चर करण और शकुनि से किंस्तुघ्न तक स्थिर करण हैं।

चर करण का प्रारम्भ शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से होता है। जैसे - शुक्लपक्ष की प्रतिपदा के उत्तरार्ध में बवकरण, द्वितीया के पूर्वार्द्ध में बालव करण, तथा उत्तरार्ध में कौलव करण इसी प्रकार सातों करण क्रमशः आते है। एक मास में इनकी आठ आवृत्तियाँ होती है। कृष्णपक्ष की चतुर्दशी के उत्तरार्ध में स्थिर करण आरम्भ होता है। जैसे - कृष्णपक्ष चतुर्दशी के उत्तरार्ध में शकुनि, अमावस्या के पूर्वार्द्ध में चतुष्पद उत्तरार्ध में नाग और शुक्लपक्ष की प्रतिपदा के पूर्वार्ध में किंस्तुघ्न करण होता है।

लग्न निर्धारण

जिस प्रकार बारह राशियाँ होती हैं उसी प्रकार बारह लग्न भी होते हैं। दोनों में अंतर सिर्फ इतना है कि राशियों का स्थान क्रान्तिवृत्त में प्रकल्पित है और लग्नों का अहोरात्र वृत्त में।

इस तरह मेष, वृषभ, मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ, मीन ये बारह लग्न होते हैं।
पूर्वी क्षितिज पर उसके जन्म के समय जो राशि होगी, वही उसके लग्न में लिखी जाएगी।

जातक की जन्म तिथि और जन्म समय के अनुसार ही उसका लग्न पञ्चाङ्ग में "दैनिक लग्न सारिणी" में देखा जाता है और लिख दिया जाता है।

जातक का व्यक्तित्त्व कैसा है, उसके मानसिक और शारीरिक आदि स्वभाव वह कैसा दिखता है उसका स्वभाव आदि पता चलता है।

1. जन्म तिथि – 8 अगस्त
जन्म समय – 10:38 P.M.
लग्न – मेष

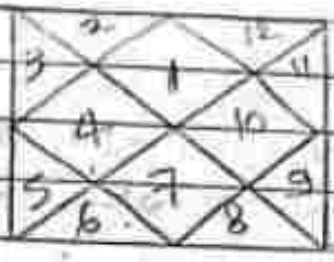

2. जन्म तिथि – 12 अगस्त
जन्म समय – 5:40 P.M.
लग्न – मकर

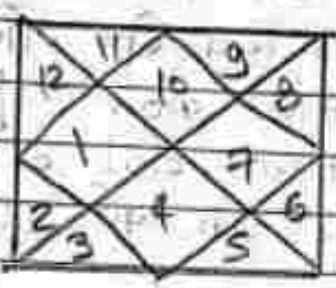

3. जन्म तिथि – 16 अगस्त
जन्म समय – 2:55 P.M.
लग्न – वृश्चिक

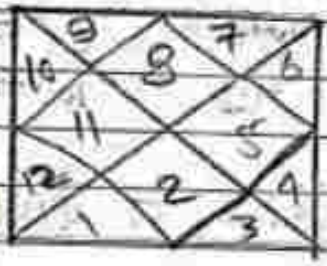

4. जन्म तिथि – 14 अगस्त
जन्म समय – 4:23 A.M.
लग्न – कर्क

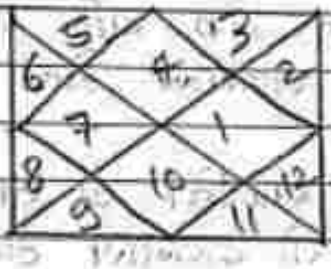

5. जन्म तिथि – 10 अगस्त
जन्म समय – 3:33 P.M.
लग्न – वृश्चिक

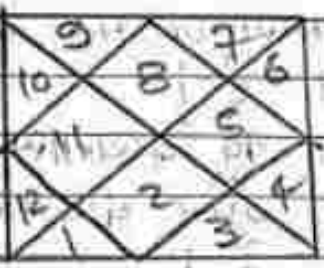

संक्रान्ति प्रकरण

संक्रान्ति :- सूर्य के एक राशि से दूसरी राशि में संक्रमण करने को अर्थात् प्रवेश को संक्रान्ति कहते है। यह काल स्नान दानादि के लिए महत्त्वपूर्ण माना गया है अर्थात् सूर्य जिस दिन एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करता है उस दिन को संक्रान्ति का दिन कहते हैं। जैसे सूर्य जिस दिन मेष राशि में प्रवेश करता है उसे मेष की संक्रान्ति कहते है। इसी तरह बारह राशियों की बारह संक्रान्ति होती हैं जब सूर्य उनमें प्रवेश करता है। इस तरह एक वर्ष 12 संक्रान्ति होती है।

राशियाँ => 1. मेष 2. वृष 3. मिथुन 4. कर्क
5. सिंह 6. कन्या 7. तुला 8. वृश्चिक
9. धनु 10. मकर 11. कुम्भ 12. मीन

अधिक व क्षयमास

शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से कृष्णपक्ष की अमावस्या के अन्त तक यदि संक्रान्ति नहीं हो तो असंक्रान्तिमास या मलमास होता है।

एक संक्रान्ति हो तो शुद्ध मास होता है और दो संक्रान्तियाँ हो तो क्षयमास होता है।
अधिमास लगभग 32 मासों में एक बार होता है जबकि क्षयमास लगभग कदाचित् 141 वर्ष या 19 वर्ष पर हुआ करता है।
जिस वर्ष क्षयमास होता है उस वर्ष क्षयमास के पहले एक और बाद में एक इस क्रम से दो अधिमास होते हैं।

तिथि क्षय वृद्धि

तिथि => सूर्य और चन्द्रमा की दूरी अपनी - अपनी कक्षाओं में जब 12° अंशों की होती है तब एक तिथि का निर्माण होता है।

1 तिथि = 12 अंश
30 तिथियाँ = 12 × 30 = 360°

तिथि शुक्लपक्ष और कृष्णपक्ष में पन्द्रह - पन्द्रह होती है।

1. प्रतिपदा 2. द्वितीया 3. तृतीया 4. चतुर्थी 5. पञ्चमी
6. षष्ठी 7. सप्तमी 8. अष्टमी 9. नवमी 10. दशमी
11. एकादशी 12. द्वादशी 13. त्रयोदशी 14. चतुर्दशी
15. पञ्चदशी या पूर्णिमा (शुक्लपक्ष) और अमावस्या (कृष्णपक्ष)

तिथि का आरंभ सूर्योदय के बाद या पहले कभी भी हो सकता है परन्तु सूर्योदय के समय जो तिथि रहती है वही तिथि मानी जाती है।

तिथि क्षय => जब चन्द्र की गति में कुछ अधिक शीघ्रता आ जाती है तब सूर्य और चन्द्र का अन्तर 12° कुछ जल्दी ही पूरा हो जाता है। तिथि का मान एक अहोरात्र से कुछ कम हो जाता है और वह तिथि दो सूर्योदय के बीच ही समाप्त हो जाती है। उसमें सूर्योदय नहीं होने से पञ्चाङ्ग में वह तिथि नहीं लिखी जाती है। उसे तिथिक्षय कहते हैं।

तिथि वृद्धि :- कभी - कभी सूर्य चन्द्र की गति के प्रभाव से तिथि का मान बढ़ जाता है तब देखा जाता है कि सूर्योदय के थोड़ा पहले किसी तिथि का आरम्भ होता है और दूसरे दिन सूर्योदय के थोड़ी देर बाद तक तिथि चल रही होती है। इस प्रकार उस तिथि में दो बार सूर्योदय हो जाता है। उसे तिथि वृद्धि कहते है।

राशि परिचय, नाम, स्वामी, उत्पत्ति

राशि परिचय => राशि शब्द का सामान्यतया अर्थ होता है 'समूह'। किसी वस्तु के समूह को राशि कहते हैं। आकाशमण्डल में तारों के खास-खास समूह को ऋषियों ने ताराओं की राशि या नक्षत्र-राशि नहीं कहकर केवल राशि में दिखाई दे रहे अनगिनत तारों (नक्षत्रों) के बीच जो मुख्य-मुख्य तारों के झुण्ड है जिसे 'तारा-राशि' या 'नक्षत्र-राशि' कहते हैं। ये केवल राशि शब्द से ही व्यवहृत हैं।

	राशि नाम	स्वामी
1.	मेष	मंगल
2.	वृष	शुक्र
3.	मिथुन	बुध
4.	कर्क	चन्द्र
5.	सिंह	सूर्य
6.	कन्या	बुध
7.	तुला	शुक्र
8.	वृश्चिक	मंगल
9.	धनु	गुरु
10.	मकर	शनि
11.	कुम्भ	शनि
12.	मीन	गुरु

राशियों की उत्पत्ति

स्वच्छ रात्रि में आकाश की ओर देखने पर अनगिनत तारे दिखाई देते हैं। किन्तु इनको ध्यानपूर्वक देखने से ज्ञात होता है कि इनमें से कोई तारे समूह में है। इन तारक समूहों से एक विशेष प्रकार की आकृति

बनती है, इसे 'तारामण्डल' कहते हैं। इन तारों द्वारा बनाई गई विशेष प्रकार की आकृतियों के आधार पर इनके विशेष नाम रख दिए जाते हैं। तारों को इस प्रकार समूहों में बाटंकर अध्ययन करने से इनको पहचानने में सुविधा होती है।

जन्म - राशि नाम, चरणादि संज्ञाएँ

जन्म राशि नाम => जातक के जन्म समय में जिस नक्षत्र के सामने चन्द्रमा होता है वह जातक का जन्म नक्षत्र कहलाता है और जन्म नक्षत्र के भी जिस चरण (प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ) में चन्द्रमा विद्यमान रहता है। उस चरण के अनुसार जातक का जन्मपत्री में उसका नाम रखा जाता है। नक्षत्रों के चरणों के पृथक - पृथक एक - एक अक्षरों का नाम है।

1.	अश्विनी	चू, चे, चो, ला
2.	भरणी	ली, लू, ले, लो
3.	कृत्तिका	अ, इ, उ, ए
4.	रोहिणी	ओ, व, वी, वू
5.	मृगशीर्ष	वे, वो, क, की
6.	आर्द्रा	कु, घ, ङ, छ
7.	पुनर्वसु	के, को, ह, ही
8.	पुष्य	हू, हे, हो, डा
9.	आश्लेषा	डी, डू, डे, डो
10.	मघा	मा, मी, मू, मे
11.	पूर्वाफाल्गुनी	मो, टा, टी, टू
12.	उत्तराफाल्गुनी	टे, टो, प, पी
13.	हस्त	पू, ष, ण, ठ

14.	चित्रा	बपे, पो, रा, री
15.	स्वाती	रू, रे, रो, ता
16.	विशाखा	ती, तू, ते, तो
17.	अनुराधा	ना, नी, नू, ने
18.	ज्येष्ठा	नो, या, यी, यू
19.	मूल	ये, यो, भ, भी
20.	पूर्वाषाढ़ा	भू, ध, फ, ढ
21.	उत्तराषाढ़ा	भे, भो, ज, जी
22.	अभिजित	जू, जे, जो, खा
23.	श्रवण	खी, खू, खे, खो
24.	धनिष्ठा	गा, गी, गू, गे
25.	शतभिषा	गो, स, सी, सू
26.	पूर्वाभाद्रपदा	से, सो, द, दी
27.	उत्तराभाद्रपदा	दू, थ, झ, ञ
28.	रेवती	दे, दो, च, ची

चर आदि संज्ञाएँ

1.	मेष	चर
2.	वृष	स्थिर
3.	मिथुन	द्विस्वभाव
4.	कर्क	चर
5.	सिंह	स्थिर
6.	कन्या	द्विस्वभाव
7.	तुला	चर
8.	वृश्चिक	स्थिर
9.	धनु	द्विस्वभाव
10.	मकर	चर
11.	कुम्भ	स्थिर
12.	मीन	द्विस्वभाव

ग्रह , शुभ - पाप ग्रह , ग्रह शत्रु - मैत्री , दृष्टि

ग्रह => फलितज्योतिष में सूर्य , चन्द्र , मङ्गल , बुध , गुरू , शुक्र , शनि , राहु और केतु इन सबों के सभी की ग्रह संज्ञा कही गई है |

शुभ ग्रह => पूर्णचन्द्र , गुरु और शुक्र शुभग्रह हैं | बुध यदि पापग्रह के साथ न हो तो वह भी शुभग्रह की श्रेणी में आता है |

पापग्रह => क्षीणचन्द्र , पापग्रह से युत , बुध , सूर्य , मंगल , शनि , राहु , और केतु पापग्रह कहलाते है |

ग्रह - मैत्री => ग्रहों की प्रकृति के आधार पर जो एक ग्रह का दूसरे ग्रह से उत्पन्न भाव है उसे नैसर्गिक मैत्री , शत्रुता या समता कहते हैं |
जन्मकालिक स्थिति वश जो भाव उत्पन्न होते हैं उसे तात्कालिक मैत्री और शत्रुता कहते है | इन दोनों के संबंध से पाँच प्रकार की मैत्री उत्पन्न होती है |

नैसर्गिक मैत्री => जो ग्रह स्वभावत: जिनके मित्र , शत्रु या सम होते है उसे निसर्ग मित्रादि कहा जाता है |

ग्रह	मित्र	शत्रु	सम
सूर्य	मं. चं	शनि , शुक्र	बुध
चन्द्र	सू. बु.	राहु	मं. गु. शु. श
मंगल	सू. च. गु.	बुध	शु. श.
बुध	सू. शु.	चन्द्र	मं. गु. श.
गुरु	सू. च. मं.	बुध शुक्र	शनि
शुक्र	श. बु.	सू. च.	मं. गु.
शनि	शु. बु.	सू. च. मं.	गुरु
राहु	श. बु. शु.	सू. च. मं.	गुरु

तात्कालिक मैत्री => परिस्थितिवश जो ग्रह मित्र की तरह देने लगता है उसे तात्कालिक मित्र तथा उसी प्रकार शत्रु को भी जानना चाहिए। जैसे जो ग्रह जहाँ रहता है वहाँ से तीन घर आगे और तीन घर पीछे परस्पर मित्रता रखता है अर्थात् ग्रह जिसमें है उससे 2, 3, 4 स्थान आगे तथा 10, 11, 12 स्थान पीछे का तात्कालिक मित्र होता है इसके अतिरिक्त स्थान में रहने पर शत्रु होता है।

पञ्चधा मैत्री विचार => नैसर्गिक और तात्कालिक मित्रता, शत्रुता आदि के सम्मिश्रण से पञ्चधा मैत्री चक्र बनता है।

	नैसर्गिक	+	तात्कालिक	=>	पञ्चधा
1.	मित्र	+	मित्र	=	अधिमित्र
2.	सम	+	मित्र	=	मित्र
3.	शत्रु	+	मित्र	=	सम
4.	शत्रु	+	शत्रु	=	अधिशत्रु
5.	सम	+	शत्रु	=	शत्रु

ग्रह दृष्टि => कोई भी भाव या ग्रह शुभ या अशुभ फल देने में कितना समर्थ या असमर्थ है इसके लिए ग्रहों का सम्बन्ध देखा जाता है। ये सम्बन्ध अनेक प्रकार से होता है। जिसमें दृष्टि सम्बन्ध का एक महत्वपूर्ण स्थान है। इस दृष्टि के भी अनेक भेद है। अभी जिस दृष्टि का सामान्यतः सर्वत्र अधिक प्रचार है उसकी चर्चा करते हैं —

1) पूर्णदृष्टि
2) अर्द्ध दृष्टि
3) पादोन दृष्टि
4) पाद दृष्टि

1. पूर्णदृष्टि => जो ग्रह जन्मकुण्डली में जहाँ रहता है वहाँ से सातवें को पूर्ण दृष्टि से देखता है। जैसे कोई ग्रह यदि वृष राशि में है तो वह वृश्चिक ग्रह राशि में स्थित ग्रहों और भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है। यदि कोई ग्रह मिथुन राशि में स्थित हो तो वह अपने से सातवें धनु राशि में स्थित ग्रहों एवं भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है। इसके अतिरिक्त शनि, गुरु एवं मंगल की विशेष दृष्टि का भी प्रावधान है।

अर्द्ध दृष्टि => जो ग्रह जहाँ रहता है उस स्थान से पाँचवें और नौवें को आधी (दो चरण) दृष्टि से देखता है किन्तु गुरु इन्हें भी पूर्ण दृष्टि से देखता है।

पादोन दृष्टि => जो ग्रह जहाँ रहता है उस स्थान से तीसरे और दसवें स्थानों में स्थित ग्रहों और भावों को तीन चरण दृष्टि से देखता है। केवल शनि तीसरे और दसवें को पूर्ण दृष्टि से देखता है।

पाद दृष्टि => जो ग्रह जहाँ रहता है उस स्थान से चौथे और सातवें आठवें स्थान को एकचरण (पाद दृष्टि) से देखता है। किन्तु मंगल चौथे और आठवें को भी पूर्ण दृष्टि से ही देखता है।

लग्न व लग्नेशानुसार जातक का व्यक्तित्व

लग्न => लग्न शब्द स्वयं ही यह स्थापित करता है कि इसका अर्थ लगना है। वस्तुतः लग्न में यही होता है। जब इष्टकाल में क्रान्तिवृत्त का जो स्थान उदयक्षितिज में लगता में लगता है वही राश्यादि लग्न होता हैं। जैसे 12 राशियाँ होती हैं उसी प्रकार 12 लग्न भी होते हैं। जिनका नाम भी राशियों की तरह ही है। बस दोनों में अन्तर इतना है कि राशियाँ क्रान्तिवृत्त में स्थित होती है तथा लग्न अहोरात्र वृत्त में स्थित होते हैं।
इस तरह मेष, वृषभ, मिथुन, कर्कादि ये बारह लग्न होते है। लग्न को प्रथम भाव या तनु भाव भी कहा जाता है। विभिन्न आचार्यों के मतानुसार जन्म लग्न की ही तरह चन्द्र लग्न और सूर्य लग्न भी कहा जाता है।

लग्नेशानुसार जातक का व्यक्तित्व

जन्मपत्र के आधार पर जातक के कायिक, वाचिक और मानसिक चारित्र का विश्लेषण एवं दैहिक, दैविक तथा भौतिक समृद्धि का विशेषण करने के सन्दर्भ में लग्न का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान है। प्रत्येक लग्न का अपना - अपना वैशिष्ट्य होता है। एक ही ग्रह अलग - अलग लग्नों के लिए अलग - अलग को निर्देशित करता है। कभी शुभग्रह शुभफल भी अशुभफल का कारक होता है तो कभी अशुभग्रह भी शुभग्रह का कारक होता है।

1.) मेष लग्न

मानसिक लक्षण = उद्यमी, साहसी, शीघ्रकोशी, स्पष्टवादी।
शारीरिक लक्षण = दुर्बल, मध्यम कद, आँखें गोल।

2.) वृष लग्न

मानसिक लक्षण = सहिष्णुता, स्वार्थपूर्ण, विवेकपूर्ण।
शारीरिक लक्षण = गोल मुँह वाला, बलशाली, सुन्दर।

3.) मिथुन लग्न

मानसिक लक्षण = उत्तमवक्ता, हास्ययुक्त, लिखने पढ़ने में रुचि।
शारीरिक लक्षण = आकर्षक नेत्र, लम्बा शरीर, भरा हुआ चेहरा।

4.) कर्क लग्न

मानसिक लग्न = प्रगल्भ भावुकता, अपार जिज्ञासा, आत्मविश्वासी।
शारीरिक लग्न = गोल चेहरा, मध्यम कद, मोटी गर्दन।

5. सिंह लग्न

मानसिक लक्षण = निष्कपट, संगीत, उदार, आनन्दप्रिय।
शारीरिक लक्षण = आकर्षक, आकृति, चौड़ी सुखाकृति, चौड़े कन्धे।

6.) कन्या लग्न

मानसिक लक्षण = बुद्धि प्रखर, अध्ययन में रुचि, उतावलापन।
शारीरिक लक्षण = दक्ष और मितव्ययी, बड़े लोगों की कृपा।

7.) तुला लग्न

मानसिक लक्षण - आदर्शवादी, हँसमुख, सौहार्द, शीघ्रता से क्रोध।
शारीरिक लक्षण - पाप ग्रह की दृष्टि, क्रियाशील, विरल दाँत।

8.) वृश्चिक लग्न

मानसिक लक्षण - उद्धत, बहुत अच्छा मित्र होता है किन्तु उससे अच्छे श
शारीरिक लक्षण - रूप-रंग सुंदर, आकृति भव्य, पैर जांघ आदि सुडौल।

9.) धनु लग्न

मानसिक लक्षण - भला आदमी, दार्शनिक, मानवता का गुण अधिक
शारीरिक लक्षण - कफ प्रकृति, जोड़ो में दर्द की संभावना, प्रायः मोटा

10.) मकर लग्न

मानसिक लक्षण - नीच विचार का, थोड़ा डरपोक, ईश्वर में पूर्ण निष्
शारीरिक लक्षण - उत्साही और परिश्रमी, सीना चौड़ा।

11.) कुम्भ लग्न

मानसिक लक्षण - कोमल हृदय किन्तु लोभी व्यक्तित्व, बहुत चतुर
शारीरिक लक्षण - प्रायः सुन्दर, होंठ मोटे, वक्ष प्रदेश आदि में कष्ट।

12.) मीन लग्न

मानसिक लक्षण - चतुर, चेतना समृद्ध, बहु आयामी व्यक्तित्व।
शारीरिक लक्षण - पित्त प्रधान, पैरों में शीतप्रकोप।

पञ्चक

पंचक पाँच दिन के होते हैं।
पंचक हर महीने आते हैं।
धनिष्ठा नक्षत्र के उत्तरार्ध से रेवती नक्षत्र तक $4\frac{1}{2}$ नक्षत्रों का काल पंचक कहलाता है। धनिष्ठा नक्षत्र के उत्तरार्ध में चन्द्रमा कुम्भ राशि में प्रवेश करता है और रेवती नक्षत्र तक चन्द्रमा मीन राशि में रहता है।

अर्थात जब चन्द्रमा कुम्भ राशि में प्रवेश करता है, उस समय पंचक प्रारम्भ होते हैं। जब चन्द्रमा कुम्भ और मीन राशि को भोगकर मेष राशि में ~~प्रवेश~~ प्रवेश करता है उस समय पंचक समाप्त होते हैं।

जिस समय तक चन्द्रमा कुम्भ और मीन राशि में रहेगा तब तक पंचक रहेंगे।

पंचक के समय दक्षिण यात्रा, घर की छत बनाना, प्रेतदाह, तृणकाष्ठ संग्रह और चारपाई बुनना आदि शुभ नहीं होता।

अतः पञ्चक में कई शुभ कार्यों का निषेध किया गया है।

मुहूर्त विचार

1) यात्रा मूहूर्त

सिताद्या पूर्णिमा चैव नैव रिक्ता च द्वादशी ।
षष्ठ्यष्टमी तु संत्याज्या यात्रायां शुभाकांक्षिभिः ॥

→ शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा, पूर्णिमा, रिक्ता तिथियाँ, द्वादशी, षष्ठी और अष्टमी तिथियाँ यात्रा में शुभ नहीं हैं ।

पौष्णाद्यादित्यकरेज्यमित्रमिन्दुहरी वासवमानियानि ।
श्रेष्ठानि यात्रासु नवैव तानि सुस्वात्रिपञ्चादिसप्तमानि ॥

→ रेवती, अश्विनी, मृग पुर्नवसु, हस्त, पुष्य, अनुराधा, मृगशीर्ष, श्रवण, धनिष्ठा, ये नक्षत्र यात्रा में शुभ हैं ।
इसमें जन्म, तीन, पाँच व, सातवीं तारा को छोड़ अवश्य ही देना चाहिए ।

तिस्रोत्तरापाणनैर्ऋतेन्द्र पूर्वात्रयं बाहममयुग्दशैवम् ।
मध्यानि नेष्टान्यनलानिलेन्द्राद्विदैव चित्राहिमघातकानि ॥

→ तीनों उत्तरा, शतभिषा, मूल, ज्येष्ठा, तीनों पूर्वा और रोहिणी, ये दस नक्षत्र मध्यम हैं तथा कृतिका, स्वाती, आर्द्रा, विशाखा, चित्रा, आश्लेषा, मघा और भरणी ये 8 नक्षत्र सर्वथा वर्जित हैं ।

2.) गृह प्रवेशे मासा: (नारद:)

माघफाल्गुनवैशाखज्येष्ठमासेषु शोभन: ।
प्रवेशो मध्यमोज्ञेय: सौम्यकार्तिकमासयो: ॥

→ माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ, मास में गृहप्रवेश करना शुभ तथा कार्तिक और मृगशीर्ष में मध्यम (सामान्य फलप्रद) होता है।

3.) गृहप्रवेश दिगभिमुखतिथय:

नन्दायां दक्षिणद्वारं भद्रायां पश्चिमामुखम् ।
जयायामुत्तर द्वार पूर्णायां पूर्वतोमुखम् ॥

→ नन्दा तिथि में दक्षिणद्वार से, भद्रा तिथि में पश्चिमद्वार से, जया में उत्तरद्वार, तथा पूर्णा में पूर्वद्वार से प्रवेश शुभ फलप्रद होता है।

4.) पशु प्रवेश विचार:

स्थिरातनर्क्षजिभविश्वकर्मप्रोक्त –
रात्र्ये भूतदिनेऽष्टमी तिथौ ।
दर्शे निवेशश्च विनिर्गमोखौ
चतुष्पदानां क्रयविक्रयौ नहि ॥

→ श्रवण (सनातन), रोहिणी, चित्रा व तीनों उत्तरा नक्षत्रों में, चतुर्दशी, अष्टमी, अमावस्या तिथियों में और रविवार के दिन पशु लाना, किसी को देना या क्रय विक्रय नहीं करना चाहिए।

केन्द्रिय - संस्कृत - विश्वविद्यालयस्य
अन्तर्गत:

श्री - दिगम्बर - जैन - आचार्य - महाविद्यालय:,
सांगानेरम्, जयपुरम्, राजस्थानम्

कार्यशाला

छात्राचार्यस्य विवरणम्

नाम - राहुल जैन:

कक्षा - आचार्य 'प्रथम वर्ष'

अनुक्रमाङ्क: - 35497

विषय: - ग्रन्थस्य परिशीलनम्
(आचार्यविद्यानन्दविरचिताया: आप्तपरीक्षाया: दार्शनिकविवेचनम्)

दिनाङ्कः - २५/07/२०२३ दिवसम् - मङ्गलवासरः

विषयवस्तु - विभिन्नदर्शनानां सामान्यपरिचयः ।

कार्यशालाविवरणम् ⇒ भारतीयदर्शने वैदिकावैदिकयोः भेदेन द्विधा विभक्तमस्ति । न्याय- वैशेषिक - सांख्य योग - मीमांसा वेदान्तादीनि षड्दर्शनानि वैदिकानि, जैन - बौद्ध चार्वाकादीनि त्रीणि दर्शनानि अवैदिकानि कथ्यन्ते । वेदस्य परम्परायां विश्वस्यां- न्याय वैशेषिकं - सांख्य - योग मीमांसा - वेदान्ता: इति षड्वैदिकानि दर्शनानि सन्ति तथा चार्वाक - च बौद्ध - जैना: इमानि त्रीणि अवैदिकदर्शनानि सन्ति ।

दिनांकः २६/07/२०२३ दिवसम् - बुधवासरः

विषयवस्तु - भारतीयदर्शनेषु जैनदर्शनस्य योगदानम्

कार्यशालाविवरणम् ⇒ अहिंसायाः परिपूर्णतायाः स्थायित्वस्य च प्रेरणा नानस्युध्येडनेकान्त - दर्शनसदृश कोषागारं वचनशुद्धये च " स्याद्वाद' सदृशां पद्धतिं भारतीयदर्शनाय प्रायच्छत् जैन दर्शनम् । भाषणावसरे सदैव वक्ताइदेयमिदं यत् सः यद् ब्रूते तावदेव वस्तु नास्ति । सम्भवेत यत्तस्य पूर्णस्वरूपमधिगन्तुमसमर्थः स स्यात् । इममेव भावं बोधयितुं वक्ता 'स्यात' शब्दं प्रयुनक्ति । सप्तभङ्गी जैनदर्शनस्य मुख्यसिद्धान्तो विद्यते ।

दिनाङ्कः :- २७/०७/२०२३ दिवसम् - गुरुवासरः

विषयवस्तु - जैनदार्शनिकानां परिचयः ।

कार्यशाला विवरणम् ⇒ दर्शनस्यास्य मान्यतानुसारं जैनदर्शनस्य परम्पराऽनादिकालतः प्रवाहिता वर्तते ।

युगेऽस्मिन् आदितीर्थङ्करः ऋषभनाथतः महीः महावीर पर्यन्तं चतुर्विंशतीर्थङ्करैः जैनधर्मस्य सिद्धान्तान् प्रतिपादितम् । तदनन्तर अधोलिखितैः दार्शनिकैः आचार्यैः जैनदर्शनस्य विकासे योगदानं दत्तम् ।

1. आचार्य कुन्दकुन्द - पञ्चास्तिकायादयः ।
2. आचार्य - उमास्वामी - मोक्षशास्त्रमादयः ।
3. आचार्य समन्तभद्रः - गन्धहस्तिमहाभाष्यमादयः ।
4. आचार्य पूज्यपादः - जैनेन्द्रव्याकरणमादयः ।
5. हेमचन्द्रसूरिः - छन्दोनुशासनमादयः ।

दिनाङ्कः :- २८/०७/२०२३ दिवसम् - शुक्रवासरः

विषयवस्तु - आचार्यविद्यानन्दस्य व्यक्तित्वं कृतित्वञ्च ।

कार्यशाला विवरणम् - श्रीमद्विद्यानन्दो जैनदर्शनस्य अद्वितीयो दार्शनिको विद्वानासीत । अनेन मनप्रसोऽकलङ्कः स्वादर्शं मत्वा स्वीयसा तल्यस्पर्शिया प्रज्ञया जैनप्रमाणशास्त्रमति विस्तारितवान् । आचार्य विद्यानन्देन नैकाः ग्रन्थाः, टीकाः, वार्तिकाः च लिखितम् । आचार्य - उमास्वामिना तत्त्वार्थसूत्रग्रन्थस्य टीका 'तत्त्वार्थश्लोक वार्तिके' रूपः लिखितवान् -

दिनांक: 31/7/2023 दिवसम् - सोमवासर:

विषयवस्तु - विद्यानन्दस्य कृतीनां विमर्शः ।

कार्यशाला विवरणम्

विद्यानन्दस्य जीवनवृत्तविमर्शानन्तरं साम्प्रतं तदीय कृतीनां परिचयोऽत्र प्रस्तूयते । विद्यानन्देन द्विप्रकारका: कृतय: विरचिता: (1) मौलिककृतय: -
(क) विद्यानन्दमहोदयम् । (ख) आप्तपरीक्षा ।
(ग) प्रमाणपरीक्षा (घ) पत्रपरीक्षा ।

(2) व्याख्यात्मिककृतय: -
(क) तत्त्वार्थश्लोकवार्तिकम् । (ख) युक्त्यनुशासनालङ्कारम् ।
(ग) अष्टसहस्री आप्तमीमांसालङ्कृति: ।

दिनांक: 1/8/23 दिवसम् - ~~मंम~~ मंगलवार:

विषयवस्तु - जैनदर्शनस्य महत्वम् ।

कार्यशाला महत्वम्

भारतीयदर्शनस्येतिहासे जैनदर्शनस्य विशिष्टं महत्त्वपूर्णं च स्थानमस्ति । अस्य दर्शनस्यानुसारेण कस्यचिदपि तत्त्वस्य विषये कोऽपि तात्त्विकदृष्टि: ऐकान्तिकी भवितुं नार्हति । जैनदर्शनस्य मुख्यमुद्देश्यमनेकान्तसिद्धान्तानुसारेण विभिन्नमतानां समन्वयोऽस्ति । विचारजगत: अनेकान्तसिद्धान्त एव नैतिकजगति अहिंसाया: रूपमाधत्ते । अत: भारतीयदर्शनस्य विकास: ज्ञातुं जैनदर्शनस्य विशिष्टं महत्त्वमस्ति ।

दिनांक: 2|8|2023 दिवसम् - बुधवासर:

विषयवस्तु - द्रव्याणां विवेचनम् ।

कार्यशालाविवरणम् - जैनदर्शनानुसारे द्रव्यस्य परिभाषा यद्-
द्रव्यलक्षणम् ॥ उत्पादव्यय ध्रौव्ययुक्तं सत् ।
षड् द्रव्याणि भवन्ति ।

(i) जीवद्रव्यम् - उपयोगो लक्षणम्
(ii) पुद्गलद्रव्य - स्पर्शरसगन्धवर्णवन्त: पुद्गला: ।
(iii) धर्मद्रव्य - गतिस्थित्युपग्रहो ।
(iv) अधर्मद्रव्य - धर्माधर्मयोरुपकार: ।
(v) आकाशद्रव्यम् - आकाशस्यावगाह: ।
(vi) कालद्रव्यम् - वर्तना - परिणाम - क्रिया परत्वापरत्वे - च कालस्य ।

दिनांक: 3|8|2023 दिवसम् - गुरुवासर:

विषयवस्तु - तत्त्वनिरूपणम्

कार्यशालाविवरणम्

जैनदर्शने तत्त्वपदार्थद्रव्याणां विवेचनमनेकदृष्टिभि: कृतम् । तत्त्वानां निरूपणं हेयोपादेयदृष्ट्या कृतम् । तत्र जीव - संवर निर्जरा मोक्षेति - चतुस्तत्त्वान्युपादेयानि अजीव; आस्रव, बन्धेति त्रीणि तत्त्वानि हेयानि ।

सप्त तत्त्वानां नामानि -

:जीवाजीवास्रवबन्धसंवरनिर्जरामोक्षास्तत्त्वम् ।

दिनांक: 4|8|2023 दिवसम् - शुक्रवासर:

विषयवस्तु - ईश्वरावतारवादविचार: ।

कार्यशालाविवरणम् - अत्राचार्यप्रवरीश्वरावतारवाद विचार: प्रस्तूयते । तत्र तावदीश्वरावतारवादिना उच्यते । यत्र कस्यचिद्दुष्टस्य निग्रहं शिष्टस्य चानुग्रहं करोतीश्वर: प्रभुत्वात्, लोकप्रसिद्ध प्रभुवत् ।

न चैवं तानेनेश्वरसिद्धि: नाना प्रभूणामेक - महाप्रभुतन्त्रत्वदर्शनात् ।

यथा - स्वयं देहविधाने तु तेनैव व्यभिचारिता ।
कार्यत्वादे: प्रयुक्तस्य हेतोरीश्वरसाधने ॥

दिनांक: 5|8|2023 दिवसम् - शनिवासर:

विषयवस्तु - ईश्वरज्ञानस्य नित्यानित्यत्वविमर्श: ।

कार्यशालाविवरणम् - विशेषकामिमत अशरीरस्येश्वरस्य ज्ञाने आचार्य विद्यानन्दमहोदयै: स्वग्रन्थेषु बहूनि दोषाणि प्रतिपादितानि । किं शरीरस्य ईश्वरस्य ज्ञानं नित्यमनित्यं वा ? पक्षद्वयं क्रमश: विचार्यते ।

तद्यथा - ज्ञानमीशस्य नित्यं चेदशरीरस्य न क्रम: ।
कार्याणामक्रमाद्धेतो: कार्यक्रमविरोधत: ॥

दिनांक: 7|08|2023 दिवसम् - सोमवासर:

विषयवस्तु - सुगतस्याप्तत्व विमर्श:

कार्यशालाविवरणम्

आचार्यविद्यानन्दप्रवरै: द्वितीयपरिच्छेदे कपिलस्याप्तत्वं विचार्यास्मिन् परिच्छेदे बौद्ध दर्शनाभिमतसुगताप्तत्वस्य विमर्शोऽत्र विधीयते । तैर्महाद्यै: सुगतस्याप्तत्वविमर्शे बौद्धदर्शनस्य वैभाषिक - सौत्रान्तिक - योगाचार माध्यमकश्चेति । चतुर्णां सम्प्रदायानां समीक्षणं कृतम् । तेषु सर्वज्ञवादिनां समीक्षणं कृतम् । तेषु सर्वज्ञवादिनां - वैभाषिक सौत्रान्तिक योगाचार मतानां क्रमश: विचार: क्रियते । सर्वज्ञा भाववादिशून्यवादस्य तत्त्वोपप्लववादस्य समीक्षणमग्रे करिष्यति ।

दिनांक - 8|08|23 दिवसम् - मंगलवासर:

विषयवस्तु - परमपुरुषस्याप्तत्वविमर्श:

कार्यशाला विवरणम् - तृतीय परिच्छेदे सुगतस्याप्तत्वस्य सविस्तरं विमर्श: कृत: । वेदान्तदर्शनाभिमत परमपुरुष - स्याप्तत्वस्य विमर्श: उच्यते ।

वेदान्तदर्शने सर्वज्ञता अन्त:करणधर्मरूपेण अभ्युपगते जीवनमुक्तावस्थां यावच्च सा स्वीक्रियते । तत: परं सा ततो मुच्यते । तदा आत्मा अविद्या विमुच्य विद्यास्य सच्चिदानन्द ब्रह्मरूपं प्राप्नोति । सर्वज्ञता च आत्मज्ञतायां विलीयते ।

दिनांक: 09/08/23 दिवसम् - बुधवासर:

विषयवस्तु → नियोगवादविमर्श:

कार्यशालाविवरणम्

अत्रविद्यानन्दैः नियोगवादस्य विमर्शः भावनावादिद्वारा क्रियते। तत्र तावत् भाट्टैर्नियोगवादनिराकरणार्थं तस्य पूर्वपक्षं स्पष्टयति - वेदवाक्यार्थो भावना एव इति साम्प्रदायः श्रेयान् नियोगो न, नियोगे बाधकसद्भावात्। कोऽयम्नियोगो नाम? निरवशेषो नियोगार्थो योगार्थो युक्तिनिरवशेषो योगो नियोगः। निरवशेषत्वम् प्रयोगस्य मनागप्यभावात्। अवश्यकर्तव्यता हि नियोगः।

दिनांक: 10/08/23 दिवसम् - गुरुवासर:

विषयवस्तु - विधिवादविमर्शः

कार्यशालाविवरणम्

नियोगवादस्य समीक्षां विधिपात्र विद्यानन्दैः भावनावादद्वारा विधिवादस्य विमर्शो विधीयते। तत्र तावद् भाट्टैर्-विधिवादं दूषयति। विधिवादोऽपि विचार्यमाणो बाध्यते। सोऽपि हि प्रमाणरूपो वा स्यात् प्रमेयरूपो वा तदुभयरूपो वा पुरुषव्यापाररूपो वा, शब्द-व्यापाररूपो वा व्यापारद्वयरूपो वा इत्यतो विकल्पानतिक्रामति।

दिनांक: 11/08/2023 दिवसम् शुक्रवासर:

विषयवस्तु — भावनावादविमर्श:

— कार्यशालाविवरणम्

विधिवादस्य समीक्षां कृत्वा अत्र भावनावादस्य विचार: क्रियते। तत्र तावत् भावनावादिना कथ्यते यत् भावनावाक्यार्थ:। सा हि द्विधा शब्दभावनार्थभावना च।

(1) शब्दात्मभावनामाहुरन्यामेव लिङादय:।
इयं त्वन्यैव सर्वार्था सर्वाख्यातेषु विद्यते॥

(2) अन्योऽपि भावलिङ्क्त स्यात्संपृक्तं तु कारकै:।
धात्वर्थ: केवल: शुद्धो भाव इत्यभिधीयते॥

उपसंहार: → शोधप्रबन्धेऽस्मिन् पूर्ववर्णितस्य "आचार्यविद्यानन्दविरचिताया: आप्तपरीक्षाया: दार्शनिकविवेचनमिति" विषयस्य सर्वथोचिते भारतीयदर्शनादि-नीमेन दार्शनिकेन विदुषा लिखिताया: आप्तपरीक्षाया: दार्शनिकं विवेचनं नैकेनकृतिभि: फलमिति।

• आचार्यविद्यानन्दविरचिताया: आप्तपरीक्षाया: दार्शनिक-विवेचनम्' इति ग्रन्थ: डॉ॰ - शोभामालजैनेन कृत: वर्तते। अस्य ग्रन्थस्य प्रकाशक: 'शान्ति-देवी-बालचन्द्र जैन श्रुतसंवर्धन समिति' संस्था अस्तीति।

केन्द्रिय - संस्कृत - विश्वविद्यालयस्य
अन्तर्गतः
श्री - दिगम्बर - जैन - आचार्य -
महाविद्यालयः , सांगानेरम् ,
जयपुरम् , राजस्थानम्

कार्यशाला

छात्राचार्यस्य विवरणम्

नाम - महावीर जैनः
कक्षा - आचार्य "प्रथम वर्ष"
अनुक्रमाङ्कः - 35507
विषयः - ग्रन्थस्य परिशीलनम्
(आचार्य विद्यानन्द विरचितायाः
आप्तपरीक्षायाः दार्शनिकविवेचनम्)

दिनाङ्कः - 25/07/2023 दिवसम् - मङ्गलवासरः
विषयवस्तु - विभिन्नदर्शनानां सामान्यपरिचयः ।
कार्यशाला विवरणम् →

भारतीयदर्शनं वैदिकावैदिकयोः भेदेन द्विधा विभक्तमस्ति । न्याय - वैशेषिक - सांख्य - योग - मीमांसा - वेदान्तादीनि षड्दर्शनानि वैदकानि, जैन बौद्ध चार्वाकादीनि त्रीणि दर्शनानि अवैदिकानि कथ्यन्ते । वेदस्य परम्परायां विश्वस्यां न्याय - वैशेषिक - सांख्य - योग - मीमांसा - वेदान्ताः इति षड् वैदकानि दर्शनानि सन्ति तथा चार्वाक - बौद्ध - जैनाः इमानि त्रीणि ~~अवैदिकाना~~ अवैदिकदर्शनानि सन्ति ।

दिनाङ्कः - 26/07/2023 दिवसम् - बुधवासरः
विषयवस्तु - भारतीयदर्शनेषु जैनदर्शनस्य योगदानम्
कार्यशाला विवरणम् →

अहिंसायाः परिपूर्णतायाः स्थायित्वस्य च प्रेरणा मानसशुद्धयेऽनैकान्त - दर्शनसदृशकोषागारं वचनशुद्धये च "स्याद्वाद" सदृशां पद्धतिं भारतीयदर्शनाय प्रायच्छत् जैन - दर्शनम् । भाषणावसरे सदैव वक्ताद्ध्येयमिदं यत् सः यद् ब्रूते तावदेव वस्तु नास्ति । सम्भाव्यते यत्तस्य पूर्णरूपमधिगन्तुमसमर्थः स स्यात् । इममेव भावं बोधयितुं वक्ता "स्यात्" शब्दं प्रयुनक्ति । सप्तभङ्गी जैनदर्शनस्य मुख्य - सिद्धान्तो विद्यते ।

दिनाङ्कः - 27/07/2023 दिवसम् - गुरुवासरः

विषयवस्तु - जैन दार्शनिकानां परिचयः ।

कार्यशाला विवरणम् -

दर्शनस्यास्य मान्यतानुसारं जैनदर्शनस्य परम्पराऽनादिकालतः प्रवाहिता वर्तते । युगेऽस्मिन् आदितीर्थङ्कर ऋषभनाथतः महावीर-पर्यन्तं चतुर्विंशतीर्थङ्करैः जैनधर्मस्य सिद्धान्तान् प्रतिपादितम् । तदनन्तरं अधोलिखितैः दार्शनिकैः आचार्यैः जैनदर्शनस्य विकासे योगदानं दत्तम् ।

1. आचार्य कुन्दकुन्दः - पञ्चास्तिकायादयः ।
2. आचार्य - उमास्वामी - मोक्षशास्त्रमादयः ।
3. आचार्य समन्तभद्रः - गन्धहस्तिमहाभाष्यमादयः ।
4. आचार्यपूज्यपादः - जैनेन्द्रव्याकरणमादयः ।
5. हेमचन्द्रसूरिः - छन्दोनुशासनमादयः ।

दिनाङ्कः - 28/07/2023 दिवसम् - शुक्रवासरः

विषयवस्तु - आचार्यविद्यानन्दस्य व्यक्तित्वं कृतित्वञ्च ।

कार्यशाला विवरणम् -

श्रीमद्विद्यानन्दो जैनदर्शनस्य अद्वितीयो दार्शनिको विद्वानासीत् । अनेन महाप्रज्ञोऽकलङ्कं स्वादर्शं मत्वा स्वीयसा तत्त्व-स्पर्शिन्या प्रज्ञया जैनप्रमाणशास्त्रमतिविस्तारितवान् । आचार्य विद्यानन्देन नैकाः ग्रन्थाः, नैकाः वार्तिकाः च लिखितम् । आचार्य-उमास्वामिना तत्त्वार्थसूत्रग्रन्थस्य टीका 'तत्त्वार्थश्लोकवार्तिकं' एषः लिखितवान् -

मङ्गलपद्यम् - श्रीवर्द्धमानमाध्याय घातिसंघातघातनम् ।
विद्यास्पदं प्रवक्ष्यामि तत्त्वार्थश्लोकवार्तिकम् ॥

दिनाङ्कः - ३१/०१/२०२३ दिवसम् - सोमवासरः
विषयवस्तु - विद्यानन्दस्य कृतीनां विमर्शः ।
कार्यशाला विवरणम् =

विद्यानन्दस्य जीवनवृत्त विमर्शानन्तरं साम्प्रतं तदीयकृतीनां परिचयोऽत्र प्रस्तूयते । विद्यानन्देन द्विप्रकाराः कृतयः विरचिताः -

① मौलिककृतयः - (क) विद्यानन्दमहोदयः ।
(ख) आप्तपरीक्षा ।
(ग) प्रमाणपरीक्षा ।
(घ) पत्रपरीक्षा ।
(ङ) सत्यशासनपरीक्षा ।
(च) श्रीपुरपार्श्वनाथस्तोत्रम् ।

② व्याख्यात्मिककृतयः -
(क) तत्त्वार्थश्लोकवार्तिकम् ।
(ख) युक्त्यनुशासनालङ्कारम् ।
(ग) अष्टसहस्री आप्तमीमांसालङ्कृतिः ।

दिनाङ्कः - १/०२/२०२३ दिवसम् - मङ्गलवासरः
विषयवस्तु - जैनदर्शनस्य महत्त्वम् ।
कार्यशाला विवरणम् =

भारतीयदर्शनस्येतिहासे जैनदर्शनस्य विशिष्टं महत्त्वपूर्णं च स्थानमस्ति । अस्य दर्शनस्यानुसारेण कस्यचिदस्यापि तत्त्वस्य विषये कोऽपि तात्त्विकदृष्टिः ऐकान्तिकी भवितुं नार्हति । जैनदर्शनस्य मुख्यमुद्देश्यमनेकान्तसिद्धान्तानुसारेण विभिन्नमतानां समन्वयोऽस्ति । विचारजगतः अनेकान्तसिद्धान्त एव नैतिकजगति अहिंसायाः रूपमाधत्ते । अतः भारतीयदर्शनस्य विकासः ज्ञातुं जैनदर्शनस्य विशिष्टं महत्त्वमस्ति ।

दिनाङ्कः - 02/08/2023 दिवसम् - बुधवासरः
विषयवस्तु- द्रव्याणां विवेचनम् ।
कार्यशाला विवरणम् -

जैनदर्शनानुसारं द्रव्यस्य परिभाषा-
सद्द्रव्यलक्षणम् ॥ उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्तं सत् ॥
षड् द्रव्याणि भवन्ति ।
1. जीवद्रव्यम् = उपयोगो लक्षणम् ।
2. पुद्गलद्रव्यम् = स्पर्शरसगन्धवर्णवन्तः पुद्गलाः ।
3. धर्मद्रव्यम् = गतिस्थित्युपग्रहो
4. अधर्मद्रव्यम् = धर्माधर्मयोरुपकारः ।
5. आकाशद्रव्यम् = आकाशस्यावगाहः ।
6. कालद्रव्यम् = वर्तना-परिणाम-क्रिया-
परत्वापरत्वे च कालस्य ।

दिनाङ्कः - 03/08/2023 दिवसम् - गुरुवासरः
विषयवस्तु - तत्त्वनिरूपणम् ।
कार्यशाला विवरणम् -

जैनदर्शने तत्त्वपदार्थद्रव्याणां विवेचनमनेकदृष्टिभिः कृतम् । तत्त्वानां निरूपणं हेयोपादेयदृष्ट्या कृतम् । तत्र जीव-संवर-निर्जरामोक्षेति चतुस्तत्त्वान्युपादेयानि अजीव, आस्रव बन्धेति त्रीणि तत्त्वानि हेयानि ।
सप्त तत्त्वानां नामानि -

जीवाजीवास्रव बन्धसंवरनिर्जरामोक्षास्तत्त्वम् ।

दिनाङ्कः - 04/08/2023 दिवसम् - शुक्रवासरः
विषयवस्तु - ईश्वरावतारवादविचारः । -
कार्यशाला विवरणम् -

अत्राचार्यप्रवरीश्वरावतारवाद-विचारः प्रस्तूयते । तत्र तावदीश्वरावतारवादिना उच्यते । यत् कस्यचिद् दुष्टस्य निग्रहं शिष्टस्य चानुग्रहं करोतीश्वरः प्रभुत्वात्, लोकप्रसिद्ध-प्रभुवत् । न चैवं नानेनेश्वर सिद्धिः नाना-प्रभूणामेकमहाप्रभुतन्त्रत्व दर्शनात् ।

यथा - स्वयं देहविधाने तु तेनैव व्यभिचारिता ।
कार्यत्वादेः प्रयुक्तस्य हेतोरीश्वरसाधने ॥

दिनाङ्कः - 05/08/2023 दिवसम् - शनिवासरः
विषयवस्तु - ईश्वरज्ञानस्य नित्यानित्यत्वविमर्शः ।
कार्यशाला विवरणम् =

विशेषकाभिमतमशरीरस्येश्वरस्य ज्ञाने आचार्यविद्यानन्दमहोदयैः स्वग्रन्थेषु बहूनि दोषाणि प्रतिपादितानि । किं शरीरस्य ईश्वरस्य ज्ञानं नित्यमनित्यं वा ? पक्षद्वयं क्रमशः विचार्यते ।

तद्यथा -

ज्ञानमीशस्य नित्यं चेदशरीरस्य न क्रमः ।
कार्याणामक्रमाद्धेतोः कार्यक्रमविरोधतः ॥

दिनाङ्कः - 07/08/2023 दिवसम् - सोमवासरः
विषयवस्तु - सुगतस्याप्तत्वविमर्शः
कार्यशालाविवरणम् -

आचार्यविद्यानन्दप्रवरैः द्वितीयपरिच्छेदे कणिलस्याप्तत्वं विचार्यास्मिन् परिच्छेदे बौद्धदर्शनाभिमतसुगताप्तत्वस्य विमर्शोऽत्र विधीयते। तैर्महोदयैः सुगतस्याप्तत्वविमर्शे बौद्धदर्शनस्य वैभाषिक - सौत्रान्तिक - योगाचार - माध्यमिकश्चेति। चतुर्णां सम्प्रदायानां समीक्षणं कृतम्। तेषु सर्वज्ञवादिनां - वैभाषिक सौत्रान्तिक योगाचारमतानां क्रमशः विचारः क्रियते। सर्वज्ञाभावादिशून्यवादस्य तत्त्वोपप्लवस्य समीक्षणमग्रे करिष्यति।

दिनाङ्कः - 08/08/2023 दिवसम् - मङ्गलवासरः
विषयवस्तु - परमपुरुषस्याप्तत्वविमर्शः
कार्यशाला विवरणम् =

तृतीयपरिच्छेदे सुगतस्याप्तत्वस्य सविस्तरं विमर्शः कृतः। वेदान्तदर्शनाभिमत - परमपुरुषस्याप्तत्वस्य विमर्शः प्रस्तूयते।

वेदान्तदर्शने सर्वज्ञता अन्तःकरणधर्मरूपेण अभ्युपेयते जीवन्मुक्तावस्थां यावच्च सा स्वीक्रियते। ततः परं सा ततो मुच्यते। तदा आत्मा अविद्यां विमुच्य विद्यारूपसच्चिदानन्दब्रह्मरूपं प्राप्नोति। सर्वज्ञता च आत्मज्ञतायां विलीयते।

दिनाङ्कः - 09/08/2023 दिवसम् - बुधवासरः
विषयवस्तु = नियोगवादविमर्शः
कार्यशाला - विवरणम् -

अत्रविद्वान्दैः नियोगवादस्य विमर्शः भावनावादि द्वारा क्रियते । तत्र तावत् भाट्टो नियोगवादनिराकरणार्थं तस्य पूर्वपक्षं स्थापयति - वेदवाक्यानामर्थो भावना एव इति सम्प्रदायः श्रेयान् नियोगो न, नियोगे बाधकसद्भावात् । कोऽयंनियोगो नाम ? निःशेषो निःशेषार्थो योगार्थो युक्तिनिरवशेषो योगो नियोगः । निरवशेषत्वम् नियोगस्य मनागप्यभावात् । अवश्यकर्तव्यता हि नियोगः।

दिनाङ्कः - 10/08/2023 दिवसम् - गुरुवासरः
विषयवस्तु - विधिवादविमर्शः
कार्यशाला विवरणम् =

नियोगवादस्य समीक्षां विधियात्र विद्वान्दैः भावनावादद्वारा विधिवादस्य विमर्शो विधीयते । तत्र तावद् भाट्टो विधिवादनं दूष्यति । विधिवादोऽपि विचार्यमाणो बाध्यते । सोऽपि हि प्रमाणरूपो वा स्यात् प्रमेयरूपो वा, तदुभयरूपो वा पुरुषव्यापाररूपो वा, शब्द-व्यापाररूपो वा व्यापारद्वयरूपो वा इत्यस्मात् विकल्पान्नातिक्रामति ।

दिनाङ्कः - 11/08/2023 दिवसः - शुक्रवासरः १
विषयवस्तु - भावनावादविमर्शः
कार्यशाला विवरणम् ->

विधिवादस्य समीक्षां कृत्वा अत्र भावनावादस्य विचारः क्रियते । तत्र तावत् भावनावादिना कथ्यते यत् भावनावाक्यार्थः । सा हि द्विधा शाब्दभावनार्थभावना च ।

1. शाब्दीत्व भावनामाहुरन्यामेव लिङादयः ।
इयं त्वन्यैव सर्वार्था सर्वाख्यातेषु विद्यते ॥

2. सन्मात्रे भावलिङ्गं स्यात्संपृक्तं तु कारकैः ।
धात्वर्थः केवलः शुद्धो भाव इत्याभिधीयते ॥

उपसंहारः -> शोधप्रबन्धेऽस्मिन् पूर्ववर्णितस्य "आचार्यविद्यानन्दविरचितायाः आप्त-परीक्षायाः दार्शनिकविवेचनमिति" विषयस्य सर्वथोचितं भारतीयदर्शनस्याद्वितीयेन दार्शनिकेन विदुषो लिखितायाः आप्तपरीक्षायाः दार्शनिकं विवेचनं नैकेनकृतिभिः कृतमिति । "आचार्यविद्यानन्दविरचितायाः आप्तपरीक्षायाः दार्शनिकविवेचनम्" इति ग्रन्थः डॉ. - शोभालालजैनेन कृतः वर्तते । अस्य ग्रन्थस्य प्रकाशकः " शान्ति-देवी - बालचन्द्र जैन श्रुतसंवर्धन समिति" ~~संस्था~~ संस्था अस्तीति ।

केन्द्रिय - संस्कृत - विश्वविद्यालयस्य अन्तर्गत:
श्री - दिगम्बर - जैन - आचार्य: महाविद्यालय:
सांगानेर: जयपुरम्, राजस्थानम्

कार्यशाला

छात्राचार्यस्य विवरणम्

नाम - विवेक जैन
कक्षा - आचार्य "प्रथम वर्ष"
अनुक्रमाङ्क - 35499
विषय - ग्रन्थस्य परिशिलनम्
(आचार्य विद्यानन्द विरचितायाः
आप्तपरीक्षायाः दार्शनिकविवेचनम्)

दिनाङ्क = 25/07/2023 दिवसम् = मङ्गलवासर:
विषय वस्तु = विभिन्नदर्शनानां सामान्य परिचय :
कार्यशाला विवरणम् →

भारतीयदर्शनां वैदिकावैदिकयो भेदेन द्विधा विभक्तमस्ति। न्याय - वैशेषिक - सांख्य - योग - मीमांसा - वेदान्तादीनि षड्दर्शनानि वैदकानि, जैन बौद्ध चार्वाकादीनि त्रीणि दर्शनानि अवैदिकानि कथ्यन्ते। वेदस्य परम्परायां विश्वस्यां न्याय - वैशेषिक सांख्य - योग - मीमांसा - वेदान्ता: इति षड् वैदिकानि दर्शनानि सन्ति तथा चार्वाक - बौद्ध - जैना: इमानि त्रीणि अवैदिकदर्शनानि सन्ति।

दिनाङ्क = 26/07/2023 दिवसम् - बुधवासर:
विषयवस्तु - भारतीय दर्शनेषु जैनदर्शनस्य योगदानम्
कार्यशाला विवरणम् →

अहिंसाया: परिपूर्णताया: स्थायित्वस्य च प्रेरणा मानसशुद्धये अनेकान्त दर्शना सदृशकोषागारं वचनशुद्ध्ये च "स्याद्वाद सदृशां पद्धति भारतीयदर्शनाय प्रयच्छत् जैन दर्शनम्। भावनावसरे सर्वैव वक्राध्येयमिदं यत् स: यद् ब्रूते तावदेव वस्तु नास्ति सम्भाव्यते यतस्य पूर्णस्वरूपमधिगन्तुमसामर्थ्य स्यात् इममेव भावं बोधयितुं वक्ता " स्यात् शब्द प्रयुनक्ति सप्तभङ्गी जैनदर्शनस्य मुख्य सिद्धान्तो विद्यते।

दिनाङ्क → 27/07/2023 दिवसम् → गुरुवार

विषयवस्तु → जैनदार्शनिकानां परिचय:

कार्यशाला विवरणम् →

दर्शनास्त्रास्य मान्यतानुसारं जैनदर्शनस्य परम्पराऽनादिकालत: प्रवाहिता वर्तते। युगेऽस्मिन् आदितीर्थङ्कर ऋषभनाथत: महावीर पर्यन्तं चतुर्विंशतीर्थङ्करै: जैनधर्मस्य सिद्धान्तान् प्रतिपादितम्। तदनन्तर अधोलिखितै: दार्शनिकै: आचार्यै: जैनदर्शनस्य विकासे योगदानं कृतम्।

1. आचार्यकुन्दकुन्द: पञ्चास्तिकायादय:
2. आचार्य उमास्वामी: मोक्षशास्त्रमादय:
3. आचार्य समन्तभद्र: गन्धहस्तिमहाभाष्यमादय:

दिनाङ्क - 28/07/2023 दिवसम् - शुक्रवासर:

विषयवस्तु → आचार्यविद्यानन्दस्य व्यक्तित्वं कृतित्वञ्च।

कार्यशाला विवरणम् →

श्रीमद्विद्यानन्दो जैनदर्शनस्य अद्वितीयो दार्शनिको विद्वानासीत्। अनेन महाप्रसोऽकलङ्कं स्वादर्शं मत्वा स्वीयसा तत्त्वस्पर्शिन्या प्रज्ञया जैन प्रमाणशास्त्रमतिविस्तारितवान्। आचार्य विद्यानन्देन नैका: ग्रन्था: नैका: वार्तिका: च लिखितम्। आचार्य उमास्वामिना तत्त्वार्थसूत्रग्रन्थस्य टीका "तत्त्वार्थश्लोकवार्तिके" एव: मङ्गलपद्यम्

श्रीवर्द्धमानमाध्याय घातिसङ्घातघातनम्
विद्यास्पदं प्रवक्ष्यामि तत्त्वार्थश्लोकवार्तिकम्

दिनाङ्क - 31/07/2023 दिवसम् सोमवासर:
विषयवस्तु - विद्यानन्दस्य कृतीनां विमर्श:
कार्यशाला विवरणम् ⇒

विद्यानन्दस्य जीवनवृत्त विमर्शानन्तरं साम्प्रतं तदीयकृतीनां परिचयोऽत्र प्रस्तूयते।
विद्यानन्देन द्विप्रकारका: कृतय: विरचिता:

1) मौलिककृतय: - (क) विद्यानन्दमहोदय:
(ख) आप्तपरीक्षा
(ग) प्रमाणपरीक्षा
(घ) पत्रपरीक्षा

2) व्याख्यात्मिककृतय:
(क) तत्त्वार्थश्लोकवार्तिकम्
(ख) युक्त्यनुशासनालङ्कारम्

दिनाङ्क - 1/08/2023 दिवसम् - मङ्गलवासर:
विषयवस्तु ⇒ जैनदर्शनस्य महत्त्वम्।
कार्यशाला विवरणम् ⇒

भारतीयदर्शनस्येतिहासे जैन दर्शनस्य विशिष्टं महत्त्वपूर्णं च स्थानमस्ति। अस्य दर्शनस्यानुसारेण कस्यापि वस्तुनोऽपि तत्त्वस्य विषये कोऽपि तात्त्विकदृष्टि: ऐकान्तिकी भवितुं नार्हति जैनदर्शनस्य मुख्यमुद्देश्यमनेकान्तसिद्धान्तानुसारेण विभिन्न मतानां समन्वयोऽस्ति।

दिनाङ्क - ०२/०८/२०२३ दिवसः - बुधवासरः

विषयवस्तु - द्रव्याणां विवेचनम्

कार्यशाला विवरणम् -

जैनदर्शनानुसारं द्रव्यस्य परिभाषा - सद्द्रव्यलक्षणम् ॥ उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्तं सत् ।

षड् द्रव्याणि सन्ति ।

1) जीव द्रव्यम् - उपयोगो लक्षणम् ।
2) पुद्गल द्रव्यम् - स्पर्शरसगन्धवर्णवन्तः पुद्गलाः ।
3) धर्मद्रव्यम् — गतिस्थित्युपग्रहौ ।
4) अधर्मद्रव्यम् - धर्माधर्मयोरुपकारः ।
5) आकाश द्रव्यम् - आकाशस्यावगाहः ।
6) काल द्रव्यम् - वर्तना - परिणाम - क्रियां परत्वापरत्वे च कालस्य

दिनाङ्क - ०३/०८/२३ दिवसः - गुरुवासरः

विषयवस्तु - तत्त्व निरूपणम् ।

कार्यशाला विवरणम् -

जैनदर्शने तत्त्वपदार्थ द्रव्याणां विवेचनमनेकधा कृतम् । तत्त्वानां निरूपणम् श्रेयोपायद्वारा कृतम् । तत्र जीव - संवर - निर्जरा मोक्षेति चतुस्तत्त्वान्युपादेयानि अजीव, आस्रव बन्धेति त्रीणि तत्त्वानि हेयानि

सप्ततत्त्व नामानि -

जीवाजीवास्रवबन्धसंवर निर्जरा मोक्षास्तत्त्वम् ।

दिनाङ्कः - 04/08/2023 दिवसम् - शुक्रवासरः

विषयवस्तु - ईश्वरावतारवाद विचारः।

कार्यशाला विवरणम् -

अत्राचार्यप्रवरैश्वरावतारवाद - विचार प्रस्तुयते। का तावदीश्वरावतारवादिना उच्यते। यत् कस्यचिद् पुरुषस्य निग्रहं शिष्टस्य चानुग्रहं करोतीश्वरः प्रभुत्वात्, लोकप्रसिद्धं प्रभुवत्। न चैवं नानैनेश्वरसिद्धिः नाना - प्रभुणामेकमहाप्रभुतन्त्रत्व दर्शनम्।

यथा - स्वयं देहविधाने तु तेनैव व्यभिचारिता।
कर्मादिः प्रभुत्वस्य हेतोरीश्वरसाधने॥

दिनाङ्क - 05/08/23 दिवसम् - शनिवासरः

विषयवस्तु - ईश्वरज्ञानस्य नित्यानित्यत्वविमर्शः।

कार्यशाला विवरणम् -

विशेषकामिमतमशरीरश्चेश्वरस्य ज्ञाने आचार्य विद्यानन्द महोदयैः स्वग्रन्थेषु बहुनि दोषाणि प्रतिपादितानि। किं शरीरस्य ईश्वरस्य ज्ञानं नित्यमनित्यं वा। पक्षद्वयं क्रमशः विचार्यते। तद्यथा -

ज्ञानमीशस्य नित्यं चेदशरीरस्य न पुनः।
कार्याणामक्रमाद्धेतोः कार्यक्रम विरोधतः॥

दिनाङ्क - 07/08/23 दिनम् - सोमवासरः

विषयवस्तु - सुगतस्याप्तत्वविमर्शः

कार्यशाला विवरणम् -

आचार्य विद्यानन्दप्रवरैः द्वितीयपरिच्छेदे कपिलस्याप्तत्वं विचार्यास्मिन् परिच्छेदे बौद्ध दर्शनाभिमतसुगताप्तत्वस्य निराकरणं विधीयते। तैर्ग्रन्थैः सुगतस्याप्तत्वविमर्शे बौद्धदर्शनस्य वैभाषिक - सौत्रान्तिक योगाचार - माध्यमिकश्चेति चतुर्णां सम्प्रदायानां समीक्षां कृतम्। तेषु सर्वज्ञवादिनां - वैभाषिक सौत्रान्तिक योगाचारमतानां क्रमशः विचारः क्रियते। तथा शब्दादिशून्य वादस्य तत्त्वोपप्लववस्य समीक्षणमग्रे करिष्यति।

दिनाङ्क - 08/08/23 दिनम् - मङ्गलवासरः

विषयवस्तु - परमपुरुषस्याप्तत्वविमर्शः।

कार्यशाला विवरणम् -

तृतीयपरिच्छेदे सुगतस्याप्तत्वस्य सविस्तारं विमर्शः कृतः। वेदान्तदर्शनाभिमत - परमपुरुषस्याप्तत्वस्य विमर्शः प्रस्तुयते।

वेदान्तदर्शने सर्वज्ञता अन्तःकरणं धर्मरूपेण अभ्युपेयते जीवन्मुक्तावस्थां यावत् च सा स्वीक्रियते ततः परं सा ततो मुच्यते। तदा आत्मा अविद्यां विमुच्य विद्यारूपसच्चिदानन्दब्रह्मरूपं प्राप्नोति। सर्वज्ञता च आत्मगतत्वं निषिध्यते।

दिनाङ्कः - 09/08/2023 दिवसः - बुधवासरः

विषयवस्तु = नियोगवादविमर्शः

कार्यशाला विवरणम् -

अत्र विद्वद्भिः नियोगवादस्य विमर्शः भावनादि द्वारा क्रियते। तत्र तावत् भाट्टो नियोगवादनिराकरणार्थं तस्य पूर्वपक्षं स्थापयति - वेदवाक्यार्थतात्पर्यो भावना एव इति स्वपक्षम्। केचन नियोगो न नियोगो वाक्यार्थ भावात्। कोऽयं नियोगो नाम? निः शब्दो निःशेषार्थो योगार्थो युक्ति निरवशेषो योगो नियोगः। निरवशेषत्वम् अपि तस्य मानान्तर भावात्। अवश्यकर्तव्यता हि नियोगः।

दिनाङ्कः - 10/08/23 दिवसः - गुरुवासरः

विषयवस्तु - विधिवाद विमर्शः

कार्यशाला विवरणम् -

नियोगवादस्य समीक्षां विधाय तं विद्वद्भिः भावनावादद्वारा विधिवादस्य विमर्शो विधीयते। तत्र तावत् भाट्टो विधिवादं दूषयति। विधिवादोऽपि विकल्पितो बाध्यते योऽपि हि प्रमाणरूपो वा स्यात् प्रमेयरूपो वा तदुभयरूपो वा पुरुषव्यापाररूपो वा शब्द व्यापार रूपो वा व्यापार द्वय रूपो वा इत्यादौ विकल्पानतिक्रमात्।